

सुरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-11 अंक:182 ता. 13 जनवरी 2023, शुकवार, कार्यालय: 114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com

/Suratbhumi.com

/Suratbhumi

/Suratbhumi

/Suratbhumi

/Suratbhumi

कानून क्षेत्र में अब भी सामंतवाद, महिलाओं के लिए कम हैं अवसर; बोले सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़



नई दिल्ली। कानून क्षेत्र में महिलाओं को मिलने वाले अवसर को लेकर चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने बड़ी बात कही है। उन्होंने कहा कि कानून के क्षेत्र में सामंतवाद है और महिलाओं के लिए अच्छा माहौल नहीं है। वह हार्वर्ड लॉ स्कूल में ग्लोबल लीडरशिप अवॉर्ड लेने के लिए गए थे। इस दौरान हुई बातचीत में सीजेआई ने ये बात कही। उन्होंने कहा, दुर्भाग्यपूर्ण है कि कानून का क्षेत्र सामंतवादी हो गया है और यहाँ महिलाओं और वंचित समुदायों से आने वाले लोगों का स्वागत नहीं किया जाता। सेंटर ऑफ हार्वर्ड के डायरेक्टर डेविड बी विलिंक्स के साथ उन्होंने बातचीत की। बता दें कि सीजेआई चंद्रचूड़ हार्वर्ड लॉ स्कूल के एलुमनस हैं और उन्होंने यहाँ से जुरिडिशनल साइंस में डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की है। उन्होंने कहा, अक्सर हमसे पूछा जाता है कि सुप्रीम कोर्ट में महिला जजों की संख्या इतनी कम क्यों है। इसका जवाब तीन दशक पहले के प्रोफेशन में छिपा हुआ है। यानी सुप्रीम कोर्ट में आने वाले जज तीन दशक पहले के पूल से हैं। कानूनी क्षेत्र में फंडमेंटल वैल्यूज में बदलाव की बात करते हुए उन्होंने कहा कि भविष्य में अगर बदलाव लाना है तो कानून की शिक्षा देने वाले संस्थानों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

उन्होंने कहा, बहुत सारे लोग जो कानून के क्षेत्र में आते हैं उनका कोई लॉ फैमिली बैकग्राउंड नहीं होता है। उनका सहयोग करना होगा। अगर कानून की शिक्षा देने वाले संस्थान लोकतांत्रिक रूप से शिक्षा देंगे तो माहौल बदलने में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट

हमने युद्ध, संघर्ष और आतंकवाद को पीछे छोड़ा-पीएम नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने सदस्य देशों को भाई बंधु संवोधित किया। समिट को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि ये मेरा सौभाग्य है, मैं आपका स्वागत इस समिट में कर रहा हूँ। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप दुनिया के विभिन्न जगहों से इसमें हिस्सा ले रहे हैं। भारत ने हमेशा वैश्विक दक्षिण के अपने भाइयों के साथ अपने विकास संबंधी अनुभव को साझा किया है।

हमने कठिन वर्ष पीछे छोड़ दिया अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा कि हमने एक और कठिन वर्ष को पीछे छोड़ दिया जो युद्ध, संघर्ष, आतंकवाद और भू-राजनीतिक तनाव, बढ़ती खाद्य उर्वरक और ईंधन की कीमतों को दर्शाता है। अधिकांश वैश्विक चुनौतियाँ ग्लोबल साउथ द्वारा नहीं बनाई गई हैं, लेकिन जो हमें अधिक प्रभावित करती हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने इस वर्ष अपनी जी20 अध्यक्षता शुरू की है, ये स्वाभाविक है कि हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है। 'संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों की बड़ी भूमिका' वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमने विदेशी शासन के खिलाफ लड़ाई में एक-दूसरे का समर्थन किया और हम इस सदी में फिर से एक नई विश्व व्यवस्था बनाने के लिए ऐसा कर सकते हैं जो हमारे



दिया जो युद्ध, संघर्ष, आतंकवाद और भू-राजनीतिक तनाव, बढ़ती खाद्य उर्वरक और ईंधन की कीमतों को दर्शाता है। अधिकांश वैश्विक चुनौतियाँ ग्लोबल साउथ द्वारा नहीं बनाई गई हैं, लेकिन जो हमें अधिक प्रभावित करती हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने इस वर्ष अपनी जी20 अध्यक्षता शुरू की है, ये स्वाभाविक है कि हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है। 'संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों की बड़ी भूमिका' वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमने विदेशी शासन के खिलाफ लड़ाई में एक-दूसरे का समर्थन किया और हम इस सदी में फिर से एक नई विश्व व्यवस्था बनाने के लिए ऐसा कर सकते हैं जो हमारे

● वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट के उद्घाटन सत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है। भारत ने हमेशा अपने विकास संबंधी अनुभव को साझा किया है हमारा उद्देश्य वैश्विक दक्षिण की आवाज को बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि ये मेरा सौभाग्य है, मैं आपका स्वागत इस समिट में कर रहा हूँ। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप दुनिया के विभिन्न जगहों से इसमें हिस्सा ले रहे हैं। भारत ने हमेशा वैश्विक दक्षिण के अपने भाइयों के साथ अपने विकास संबंधी अनुभव को साझा किया है।

नागरिकों के कल्याण को सुनिश्चित करेगी। मुद्दों को हल करने में संयुक्त राष्ट्र जैसे आपकी आवाज भारत की आवाज है और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की बड़ी भूमिका है। हमें आपकी प्राथमिकताएँ भारत की इनमें सुधार और प्रगति को शामिल करना प्राथमिकताएँ हैं। उन्होंने कहा कि वैश्विक चाहिए।

सिलिंडर फटने से घर में लगी आग, 4 बच्चों समेत जिंदा जले 6 लोग

पानीपत। हरियाणा के पानीपत में एक दर्दनाक हादसा हुआ है। यहाँ सिलिंडर फटने से पत्नी और बच्चों समेत 6 लोग जिंदा जल गए। ये हादसा पानीपत के बिलपड़ी गांव में सुबह सात बजे हुआ। मरने वालों में दंपती, उनकी दो बेटियाँ और दो बेटे शामिल थे। दरअसल हरियाणा के पानीपत के एक गांव में सुबह सात बजे सिलिंडर फट गया जिससे घर में आग लग गई। आग इतनी भयानक थी कि परिवार के लोगों को निकलने का मौका नहीं मिला। इस हादसे में पूरा परिवार जल गया और 4 बच्चों समेत छह लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में दंपती समेत उनकी दो बेटियाँ और दो बेटे शामिल हैं। मृतकों की पहचान अब्दुल करीम (50), उसकी पत्नी अफरोजा (46), बड़ी बेटा इशरत खातुन



● हरियाणा के पानीपत में सिलिंडर फटने से पत्नी और बच्चों समेत 6 लोग जिंदा जल गए। ये हादसा पानीपत के बिलपड़ी गांव में सुबह सात बजे हुआ। मरने वालों में दंपती, उनकी दो बेटियाँ और दो बेटे शामिल थे।

(17), रेशमा (16), अब्दुल शकूर (10) और अफ़ान (7) के रूप में हुई है। पश्चिम बंगाल का रहने वाला था। पश्चिम बंगाल का रहने वाला था परिवार-हादसे का शिकार हुआ परिवार मूल रूप से

'बिहार के शिक्षा मंत्री की जीभ काटने वाले को दूंगा 10 करोड़', रामचरितमानस पर विवादित बोल के बाद भड़के संत

अयोध्या। बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर द्वारा रामचरितमानस पर दिए विवादित बयान पर हंगामा हो रहा है। अयोध्या के महंत जगदुरु परमहंस आचार्य ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया जहिर की है। उन्होंने चंद्रशेखर को मंत्री के पद से बर्खास्त करने की मांग की है।

मंत्रों को पद से बर्खास्त किया जाए जगदुरु परमहंस आचार्य ने कहा, बिहार के शिक्षा मंत्री ने जिस तरह से रामचरितमानस ग्रंथ को नफरत फैलाने वाली किताब बताया है, उससे पूरा देश आहत है। उनका यह बयान सभी सनातनियों का अपमान है। मैं इस बयान पर शिक्षा मंत्री के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग करता हूँ। उन्हें पद से बर्खास्त किया जाना चाहिए। शिक्षा मंत्री की जीभ काटने पर इनाम जगदुरु ने आगे कहा कि चंद्रशेखर को एक



हफ्ते के भीतर माफी मांगनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है, तो मैं बिहार के शिक्षा मंत्री की जीभ काटने वाले को 10 करोड़ रुपये का इनाम देने की घोषणा करता हूँ। परमहंस ने कहा कि इस तरह की टिप्पणी को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। रामचरितमानस तोड़ने वाला नहीं, जोड़ने वाला ग्रंथ

है। रामचरितमानस मानवता की स्थापना करने वाला ग्रंथ है। यह भारतीय संस्कृति का स्वरूप है, यह हमारे देश का गौरव है। रामचरितमानस पर इस तरह की टिप्पणी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। क्या है बिहार के शिक्षा मंत्री का विवादित बयान? बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने बुधवार को नालंदा यूनिवर्सिटी में दीक्षांत समारोह के दौरान विवादित बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि मनुस्मृति, रामचरितमानस और बंच आप थॉडस जैसी किताबों को जला देना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन किताबों ने नफरत फैलाई है और लोगों को सदियों पीछे धकेलने का काम किया है। इतना ही नहीं, शिक्षा मंत्री ने ये भी कहा कि रामचरितमानस में कहा गया है कि निचली जाति के लोग शिक्षा हासिल कर जहरीले हो जाते हैं, जैसे एक साँप दूध पीकर हो जाता है।

दिल्ली-एनसीआर और आसपास के इलाकों में हल्की बारिश, फिर बरसेंगे बदरा

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर के अलावा उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में देर रात से लेकर सुबह तक कुछ जगहों पर हल्की बारिश हुई। बुधवार को 11:30 बजे रात से लेकर गुरुवार को 2:30 बजे तक हल्की-हल्की फुहारों से मौसम का मिजाज बदल गया है। बारिश के कारण विजिबिलिटी और न्यूनतम तापमान में वृद्धि दर्ज की गई है। गुरुवार सुबह दिल्ली में न्यूनतम तापमान 9.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। बुधवार की तुलना में यह 3.4 डिग्री अधिक रहा। कोहरे की स्थिति में भी सुधार देखने को मिली है। सफ़रदर्ज और पालम इलाके में विजिबिलिटी 800 मीटर दर्ज की गई है। आपको बुधवार को यह सिर्फ 50 मीटर के करीब थी। मौसम विभाग ने एक अपने ताजा अपडेट्स में कहा, पश्चिमी विक्षोभ और तेज हवाओं के कारण पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और पश्चिम उत्तर प्रदेश में घने कोहरे की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। विभाग ने न्यूनतम तापमान में इजाफा होने की बात भी कही है। मौसम विभाग की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली में 12 अक्टूबर 2022 को 0.4MM बारिश हुई

थी। इसके 91 दिनों के बाद देश की राजधानी में बादल बरसे हैं। इससे पहले 24 जनवरी 2018 से लेकर 7 अप्रैल 2019 तक यानी 72 दिनों तक बारिश नहीं हुई थी। आईएमडी ने अपने पूर्वानुमान में कहा है कि न्यूनतम तापमान 19 डिग्री के आसपास रह सकती है। वहीं, अधिकतम तापमान 20.2 डिग्री रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने यह भी कहा है कि तापमान की ऐसी स्थिति शुरुवार तक बनी रह सकती है। शनिवार से हवा का रुख बदलने के कारण तापमान में फिर गिरावट देखने को मिलेगी। दो दिनों तक दिल्ली में हल्की बारिश के आसार-उत्तर पश्चिमी भारत को प्रभावित करने वाले एक मजबूत पश्चिमी विक्षोभ के कारण अगले दो दिनों तक राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बादल छाए रहने और हल्की बारिश की भविष्यवाणी की गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने बुधवार को यह जानकारी दी। मौसम केंद्र के अनुसार क्षेत्र में बारिश या बूंदबाँदी के आसार हैं, जिससे पहड़ों से लेकर मैदानी इलाकों में सूखे से कुछ राहत मिल सकती है।

केंद्र की राज्यों को चिढ़ी-कट्टर विचारधारा वाले कैदियों को जेल में अलग रखें...दूसरे पर पड़ता है असर

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने कट्टरवाद की विचारधारा वाले कैदियों के लेकर चिंता जताई है। केंद्र ने राज्यों को चिढ़ी लिखकर जेल में कट्टरवाद की विचारधारा फैलाने वाले कैदियों को अलग रखने को कहा है। केंद्र ने कहा कि कट्टरवाद की विचारधारा फैलाने वाले कैदियों का प्रभाव अन्य कैदियों पर न पड़े इसलिए उनको उनसे अलग रखा जाए। साथ ही केंद्र ने कहा कि नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले कैदियों को अलग बाड़ों में रखा जाए। केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को चिठ्ठी लिखी गई है, इसमें कहा गया कि कट्टरवाद की विचारधारा फैलाने वाले कैदियों को जेल में अलग बैक में रखा जाए। इसके साथ ही राज्य कारागर अधिकारियों को डी-



रेडिकलाइजेशन पर विशेष सत्र का आयोजन करना चाहिए। यह गुमराह अपराधियों की मानसिकता में बदलाव लाने में मदद कर सकता है। इसमें और इसकी स्मगलिंग से जुड़े

अपराध में जेल में बंद कैदियों को अन्य कैदियों से दूर रखा जाए। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्यों से कहा कि अपने अधिकार क्षेत्र में मॉडल जेल मैनुअल 2016 को अपनाएं, जिन राज्यों ने अबतक इसको नहीं अपनाया है वो इसमें तेजी लाएं और मैनुअल में दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार जेल सुधार लाने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। साथ ही सभी राज्यों के जेल अधिकारियों से कहा गया कि वे सभी जिला स्तरीय जेलों और न्यायालयों में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा का उपयोग करने के लिए विशेष प्रयास करें, जहाँ कहीं भी ऐसी सुविधा नहीं है, संबंधित न्यायालयों के अधिकारियों के साथ मामले को तत्काल आधार पर उठाकर राज्य के अधिकारियों द्वारा उच्चतम व्यवस्था कराई जाए।

शराब पर नए नियम लाने जा रही केजरीवाल सरकार

क्या फिर मिलेगा डिस्काउंट ?

नई दिल्ली। शराब नीति को लेकर सवाल और जांचों का सामना कर रही केजरीवाल सरकार 'नई शराब नीति' पर विचार कर रही है। इसमें ना सिर्फ शराब पीने की न्यूनतम उम्र को घटाकर 25 से 21 किया जा सकता है, बल्कि रात 3 बजे तक जाम छलकाने की छूट मिल जाएगी। अभी यह सीमा रात एक बजे तक है। नए प्लान से अवगत लोगों ने बताया नई नीति के तहत दिल्ली में शराब की सरकारी दुकानों के साथ प्राइवेट प्लेयर भी होंगे। मौजूदा नीति 31 मार्च को खत्म हो रही है और इसके बाद नई पॉलिसी को लागू किया जा सकता है। दिल्ली सरकार ने 2021-22 में शराब नीति में बड़े बदलाव किए थे। लेकिन यह नीति

विवादों में फिर गई और घोटाले के आरोप लगने के बाद सीबीआई और ईडी इसकी जांच कर रही है। केस दर्ज होने के बाद सरकार ने नई नीति को खत्म करके पुरानी व्यवस्था को लागू किया। एक सरकारी अधिकारी ने नाम गोपनीय रखने की शर्त पर कहा, जिन अधिकारियों को नई एक्ससाइज पॉलिसी बनाने को कहा गया है वे वैसे ड्राफ्ट दे सकते हैं जो कारोबार को दिल्ली से आसपास के शहरों में जाने से रोकेगा। ग्राहकों के अनुभव को बेहतर करेगा और राजस्व में वृद्धि होगी। दूसरे मेट्रो शहरों से अलग दिल्ली की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि कारोबार के पड़ोसी शहरों में भागने से बचाने की चुनौती है, जोकि मुंबई, बंगलुरु, कोलकाता



और चेन्नई में नहीं है। उन्होंने कहा कि पॉलिसी को अभी ड्राफ्ट किया जा रहा है। प्रस्तावित नीति में ड्रॉई डे (जिस दिन शराब की बिक्री नहीं होती) की संख्या घटाई जा सकती है, लेकिन बड़े डिस्काउंट की उम्मीदों को झटका लग सकता है। इस बार संभवतः आपको एक के साथ एक मुफ्त जैसा डिस्काउंट नहीं मिलेगा। 2021-22 की नीति से पहले दिल्ली में शराब की सरकारी और प्राइवेट दुकानें होती थीं। लेकिन निरस्त की जा चुकी नीति में सरकार ने अपने हाथ खींच लिए थे। एक बार फिर सरकारी और प्राइवेट दुकानों की व्यवस्था लाई जा सकती है। शराब की हम डिजिटल की विचार को भी लागू किया जा

शराब नीति को लेकर सवाल और जांचों का सामना कर रही केजरीवाल सरकार नई शराब नीति लाने वाली है। सिर्फ शराब पीने की न्यूनतम उम्र को घटाकर 25 से 21 किया जा सकता है। अधिकारियों ने बताया कि ड्राफ्ट किए जाने के बाद नई नीति को केजरीवाल सरकार के कैबिनेट के सामने मंजूरी के लिए रखा जाएगा। कैबिनेट से मंजूर होने के बाद इसे एलजी वीके सक्सेना के पास भेजा जाएगा। उनकी मंजूरी के बाद 1 अप्रैल से इसे लागू किया जा सकता है।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे का संदेश स्वामी विवेकानंद भारत जोड़ो में विश्वास करते थे

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर गुरुवार को कहा कि वह भारत जोड़ो में विश्वास करते थे जो भारत के आंतरिक मूल्यों में रहा- बसा है। उन्होंने राष्ट्रीय युवा दिवस पर दिए संदेश में कहा कि कांग्रेस की ओर से मैं आपको राष्ट्रीय युवा दिवस की हार्दिक बधाई देता हूँ। यह दिन भारत के महानतम दार्शनिकों में से एक स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के मौके पर मनाया जाता है। खरगे ने कहा कि विवेकानंद जी भारतीय मूल्यों के प्रतीक और हमारे युवाओं के लिए एक प्रेरणापुंज थे। स्वामी जी के विचारों और आदर्शों को श्रद्धांजलि के रूप में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में घोषित किया। कांग्रेस अध्यक्ष के मुताबिक स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में कहा था कि सांप्रदायिकता कटुता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हटने लगे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रहा है। उन्होंने इस धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी ही बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है। न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुईं और कितने देश मिटा दिए गए। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि आज हमारे करोड़ों लोग भारत को एक करने की आकांक्षा लिए इसके सपने देखने और समाज में फैली नफरत को मिटाने के लिए आतुर हैं। स्वामी जी का संदेश हम सभी के लिए विशेष रूप से हमारे युवाओं के लिए मार्गदर्शक प्रकाश बना हुआ है। उनका कहना है कि भारत दुनिया की युवा आबादी का पांचवा हिस्सा है। भारत का युवा बदलाव के लिए आतुर हैं। वे बेहतर और सुरक्षित जीवन का सपना देख रहे हैं। हम जानते हैं कि यह सभी संभव हो सकता है जब हम धर्म जाति भाषा जातीयता रंग पथ या लिंग की बाधाओं को खत्म कर दें। खरगे ने कहा सद्भाव के साथ रहने वाला समाज ही इस प्राप्त कर सकता है।

भाजपा से निलंबित नूपुर शर्मा को मिला हथियार का लाइसेंस

-दिल्ली पुलिस ने कहा- नूपुर को आत्मरक्षा के लिए जारी किया आम लाइसेंस

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी की पूर्व प्रवक्ता नूपुर शर्मा को दिल्ली पुलिस ने हथियार का लाइसेंस जारी किया है। मीडिया में फेब्रुअरी 2022 में नूपुर को पुलिस की तरफ से यह लाइसेंस आत्मरक्षा के लिए जारी किया गया है। दरअसल इस बयान के बाद नूपुर को लगातार जान से मारने की कई धमकियां दी गईं जिसके बाद उन्हें दिल्ली पुलिस ने यह आम लाइसेंस दिया। नूपुर को तयाम जगहों से जान से मारने की धमकी दी गई। उनके खिलाफ मुकदमे भी दर्ज किए गए। भारतीय जनता पार्टी ने उनके इस विवादित बयान के बाद अपनी राष्ट्रीय प्रवक्ता नूपुर शर्मा को पार्टी से निलंबित कर दिया था। उनके अलावा दिल्ली इकाई के मीडिया प्रमुख नवीन कुमार जिंदल को पार्टी से निष्कासित कर दिया गया। पार्टी ने दोनों नेताओं के खिलाफ यह कार्रवाई ऐसे समय में की जब उनके बयानों को लेकर विवाद हो गया था और मुस्लिम समुदाय ने इसका भारी विरोध किया था। दोनों नेताओं के खिलाफ की गई कार्रवाई को विवाद समाप्त करने की भाजपा की एक कोशिश के रूप में देखा गया। इस मुद्दे पर बवाल मचाने के बाद भाजपा ने एक तरह से दोनों नेताओं के बयानों से किनारा करते हुए एक बयान जारी कर कहा कि वह सभी धर्मों का सम्मान करती है और किसी भी धर्म के पूजनीय लोगों का अपमान स्वीकार नहीं करती। भाजपा से निलंबित के बाद नूपुर शर्मा ने अपना बयान बिना शर्त वापस ले लिया था। उन्होंने कहा था कि उनकी मंशा किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने की नहीं थी।

जम्मू-कश्मीर में बालटाल-जोजिला के पास भारी हिमस्खलन चारों तरफ दिखा बर्फ का सैलाब

-श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग व मुगल रोड पर यातायात बाधित

श्रीनगर। पूरे जम्मू-कश्मीर में लगातार कड़ाके की ठंड जारी है। इसी बीच जम्मू-कश्मीर के गंदरखल जिले के सोनमार्ग क्षेत्र में बालटाल जोजिला के पास गुरुवार सुबह एक बड़ा हिमस्खलन हुआ इसमें जान-माल के किसी नुकसान की खबर नहीं है। मीडिया के अनुसार स्थानीय प्रशासन इस हिमस्खलन के प्रभाव के बारे में जानकारी जुटा रहा है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 24 घंटे में राज्य के कई इलाकों में भारी बर्फबारी और बारिश होने की संभावना है। जम्मू-कश्मीर के मेदानी इलाकों में घने कोहरे और बादलों के कारण सड़क यातायात प्रभावित है। इसके साथ ही हवाई सेवाओं पर भी इसका असर दिख रहा है। कोहरे के कारण रेल सेवा भी लगातार प्रभावित है। प्रतिदिन कई ट्रेनें निर्धारित समय से घंटों की देरी से पहुंच रही हैं। मौसम विज्ञान केंद्र श्रीनगर के अनुसार 12 और 13 जनवरी के लिए पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने के कारण जम्मू और कश्मीर संभाग में बारिश-बर्फबारी के आसार हैं। इसमें कुछ स्थानों पर मौसम ज्यादा खराब हो सकता है। खराब मौसम के कारण जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग और मुगल रोड पर यातायात बाधित हो सकता है। जम्मू में बुधवार को दिन चढ़ने के साथ तेज हवाओं के बाद हल्की बारिश हुई। यहां सुबह के समय दृश्यता 25 मीटर तक रह गई थी। इससे पहले 4 और 5 जनवरी को कश्मीर घाटी को लड़ाख से जोड़ने वाले श्रीनगर-लेह हाईवे पर 24 घंटे में दस स्थानों पर हिमस्खलन के कारण भारी बर्फ पहाड़ों से खिसककर सड़क पर आ गई थी जिस कारण घंटों यातायात बाधित रहा। सीमा सड़क संगठन ने जल्द ही जवानों और आधुनिक मशीनों को लगाकर यातायात बहाल कर दिया था। हिमस्खलन में किसी प्रकार के नुकसान की सूचना नहीं है। इस साल रिकॉर्ड समय तक खुले रहे जोजिला मार्ग को 7 जनवरी से यातायात के लिए बंद कर दिया गया। बीआरओ के जोजिला मार्ग के प्रभारी कनिष्ठ अभियंता अमित ने बताया कि 4 और 5 की दरमियानी रात को जोजिला मार्ग पर 6-7 किलोमीटर के दायरे में करीब 10 स्थानों पर हिमस्खलन हुआ। श्रीनगर-लेह राजमार्ग कश्मीर को लड़ाख के साथ जोड़ने वाला एक मात्र मार्ग है। इसलिख यह न केवल आम जनता के लिए बल्कि सैन्य दृष्टिकोण के चलते भी बेहद महत्वपूर्ण है। इस वर्ष 6 जनवरी इस सीजन का आखिरी दिन रहा जब वाहनों को सोनमार्ग से द्रास और द्रास से सोनमार्ग की ओर आने जाने की अनुमति मिली। 7 जनवरी से इसे पूरी तरह से बंद किया गया।

पाकिस्तानी उच्चायोग के कर्मचारी ने महिला से पूछा..अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करती हो

नई दिल्ली। एक महिला शिक्षाविद ने दिल्ली में पाकिस्तानी उच्चायोग के कुछ वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा पाकिस्तानी वीजा के लिए आवेदन करने के दौरान अभद्र व्यवहार और यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए हैं। एक विश्वविद्यालय में एक वरिष्ठ प्रोफेसर और एक विभाग की प्रमुख ने कहा कि उसने पाकिस्तान उच्चायोग के साथ एक ऑनलाइन वीजा नियुक्ति बुक की थी। जब उसने उनकी लाहौर यात्रा के उद्देश्य के बारे में पूछा गया तब उन्होंने अधिकारी से कहा मैं स्मारकों की तस्वीरें लेने और उन पर लिखने के लिए लाहौर जाना चाहती हूँ और एक विश्वविद्यालय भी जाना चाहती हूँ जहां मुझे व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

जब वह जाने वाली थी तभी एक और कर्मचारी आ गया और उससे निजी सवाल पूछने लगा जिससे वह असहज हो गई। दूतावास के कर्मचारी ने मुझसे पूछा कि मैंने शादी क्यों नहीं की मैं बिना शादी के कैसे रहूँ? मैं अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करूँ? उन्होंने दावा किया कि विषय को बदलने के उनके प्रयासों के बावजूद अधिकारी उनके सवालों पर कायम रहे।

विदेश मंत्री एस जयशंकर को दी गई अपनी शिकायत में उन्होंने मामले को उठाने की मांग की है। उसने विदेश मंत्री को पाक उच्चायोग के कर्मचारी के साथ झटसपट्ट चेट के स्क्रीनशॉट भी भेजे हैं। उसने आरोप लगाया कि उसे भारत सरकार के खिलाफ लिखने के लिए कहा गया और अच्छे पारिश्रमिक की पेशकश की गई जिसे उसने स्पष्ट रूप से मना कर दिया। महिला ने अपनी शिकायत में कहा कि फिर उन्होंने कहा कि मेरी वीजा नहीं दिया जा सकता है और मुझे बाद में फिर से कोशिश करनी चाहिए क्योंकि वे मेरे बारे में सत्यापन करने वाले हैं। महिला ने बताया कि उन्होंने मुझसे पूछा कि मेरी शादी क्यों नहीं हुई मैं बिना शादी के कैसे रहूँ? मैं अपनी यौन इच्छाओं के लिए क्या करती हूँ?

नेपाल सीमा पर अवैध मदरसों को कौन कर रहा है फंडिंग? योगी सरकार ने जिलाधिकारियों को दिए जांच के आदेश



लखनऊ (एजेंसी)। पिछले तीन वर्षों में उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से सटे भारत-नेपाल सीमा पर मदरसों की बढ़ती संख्या गंभीर सुरक्षा चिंताओं का विषय है, खुफिया एजेंसियों ने भी हाल ही में अपनी रिपोर्ट में इसको लेकर चिंता जताई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि धार्मिक सेटअप नेपाल की सीमा से 10 किमी के भीतर और नेपाल की सीमा के पार भी हैं, जिससे बिहार, उत्तर प्रदेश और

पश्चिम बंगाल में सीमावर्ती क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में जनसांख्यिकीय परिवर्तन हुआ है। अब नेपाल की सीमा से सटे अवैध मदरसों पर उत्तर प्रदेश सरकार सख्त नजर आ रही है। यूपी सरकार ने जिले के जिलाधिकारियों को नेपाल सीमा से सटे अवैध मदरसों के फंडिंग स्रोतों की जांच के आदेश दिए हैं। बताया जाता है कि इन मदरसों ने खुद को चलाने के लिए मिलने वाले जकात यानी दान के पैसे को अपने इनकम का जरिया

घोषित किया हुआ है।

उत्तर प्रदेश सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा है कि नेपाल की सीमा पर ऐसे मदरसे हैं, जो अपने डोनेशन ग्रुप का नाम नहीं बता रहे हैं। उनका कहना है कि ऐसे मदरसों की पहचान कर ली गई है। अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि ऐसा लगता है कि इन मदरसों को बाहर से पैसा मिल रहा है। कोई बाहर से उन्हें फंड क्यों देगा? योगी सरकार के मंत्री ने साफ कहा कि हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों का गलत इस्तेमाल हो, इसकी संभावनाएं हैं।

मदरसों की अवैध फंडिंग का वा है मामला?

अधिकारियों ने खुफिया जानकारी का हवाला देते हुए कहा कि पिछले तीन वर्षों में, नेपाली क्षेत्रों में मस्जिदों की संख्या 2018 में 760 से बढ़कर 2021 में 1,000 हो गई है, जबकि मदरसों की संख्या 2018 में 508 से बढ़कर 2021 में 645 हो गई है। सुरक्षा ग्रिड के सूत्रों ने कहा कि इन धार्मिक प्रतिष्ठानों को पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटील्लिजेंस (आईएसआई) और विदेशों में काम कर रहे अन्य भारत विरोधी संगठनों द्वारा वित्त पोषित किया जा रहा है। सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने स्वीकार किया है कि इन मस्जिदों और मदरसों के आकार और भव्यता से ही विदेशी फंडिंग का संकेत मिलता है और इन धार्मिक घरानों को आईएसआई के अलावा अरब देशों से भी फंडिंग मिलती है।

चीन ने पूर्वी सेक्टर में बढ़ा दी सैनिकों की तैनाती, एलएसी को लेकर आर्मी चीफ का बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कहा कि चीन के साथ लगी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर स्थिति स्थिर लेकिन अप्रत्याशित है। 15 जनवरी को सेना दिवस से पहले मीडिया को संबोधित करते हुए जनरल पांडे ने कहा कि दोनों देश एलएसी पर सात में से पांच मुद्दों को हल करने में सक्षम हैं और सैन्य और राजनयिक स्तर पर बातचीत जारी रखते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्वी सेक्टर में चीनी सैनिकों की तैनाती में मामूली वृद्धि हुई है, लेकिन किसी भी स्थिति से निपटने के लिए रिजर्व सहित भारतीय सेना के जवानों को वहां पर्याप्त रूप से तैनात किया गया है।

किसी भी आक्रमक स्थिति से निपटने के लिए तैयार

सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कहा कि पूर्वोक्त के अधिकांश राज्यों में शांति है। आर्थिक गतिविधियों और विकास की पहल के अच्छे परिणाम मिले हैं। जहां तक जम्मू-कश्मीर की स्थिति का सवाल है, फरवरी 2021 में हुआ संघर्ष विराम



अच्छी तरह से चल रहा है, लेकिन आतंकवाद और आतंकी ढांचे को सीमा पार से समर्थन अभी भी बना हुआ है। उत्तरी सीमाओं पर स्थिति स्थिर है लेकिन अप्रत्याशित है। हम सात मुद्दों में से पांच को हल करने में सफल रहे हैं। हमने सैन्य और राजनयिक दोनों स्तरों पर बात करना जारी रखा हुआ है। किसी भी आक्रमक स्थिति से निपटने के लिए हमारे पास पर्याप्त बंडल है।

ओली में होगी जवानों की तैनाती

जोशीमठ भू-धंसाव पर सेना प्रमुख ने कहा कि

अगर टिहरी बांध टूटा तो 12 घंटे में डूब जाएंगे यूपी के कई बड़े शहर!

-42 किमी में फैली झील 22 मिनट में डूब जाएगी खाली

-जोशीमठ में आई आपदा के लिए जलविद्युत परियोजनाएं जिम्मेदार!

पिथौरागढ़ (एजेंसी)।

उत्तराखंड के जोशीमठ में आई आपदा के लिए जलविद्युत परियोजनाओं को भी जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। माना जा रहा है कि एनएल निर्माण से यहां की जमीन भीतर पूरी तरह खोखली हो गई थी। नतीजा ये है कि अब ये जगह-जगह दरकने लगी है। ऐसे में जलविद्युत परियोजनाओं पर कई सवाल उठने लगे हैं। जलविद्युत परियोजनाओं पर उठ रहे सवालों के बीच विश्व के सबसे बड़े बांधों में एक टिहरी बांध पर भी चर्चा तेज है जिस टिहरी बांध को 24 सौ मेगावॉट बिजली पैदा करने के लिए बनाया गया था।

वहां परियोजना बनने के 17 साल बाद मात्र हजार मेगावॉट ही बिजली का उत्पादन हो रहा है। टिहरी बांध को बनाने में जहां टिहरी शहर को जलमग्न होना पड़ा वहीं 37 गांव पूरी तरह डूब गए। यही नहीं अन्य 88 गांव भी आंशिक रूप प्रभावित हुए हैं। हालात ये हैं कि टिहरी बांध बनने से 40 गांवों में हर समय खतम मंडराया हुआ है। इन गांवों में अक्सर जमीन



दरकने की घटनाएं होती रहती हैं। पहले चरण में हजार मेगावॉट का टिहरी बांध निर्माण होना था जबकि दूसरे चरण में 400 मेगावॉट का कोटेश्वर बांध बनना था जबकि अंत में हजार मेगावॉट की टिहरी पम्प स्टोरेज परियोजना बननी थी लेकिन जिस योजना को बनाने में एक पूरी सभ्यता को डूबा दिया गया। वहां अभी भी लक्ष्य के मुताबिक बिजली उत्पादन नहीं हो रहा है। यही नहीं माना जाता है कि अगर बड़ी तीव्रता का भूकंप आया तो डैम भी टूट सकता है। अगर ऐसा हुआ तो यह है कि ऋषिकेश हरिद्वार बिजनौर मेरठ और बुधशहर तक का इलाका पूरी तरह जलमग्न हो जाएगा। अगर टिहरी बांध टूटा तो मात्र एक घंटे में ऋषिकेश और हरिद्वार पूरी तरह पानी में डूब जाएगी जबकि 12 घंटे में डैम का पानी मेरठ तक पहुंच जाएगा। इसके अलावा टिहरी बांध की 42 किलोमीटर लंबी झील को खाली होने में सिर्फ 22 मिनट का समय लगेगा।

जी20 सम्मेलन भारत के लिए अपनी क्षमताओं के प्रदर्शन का 'शानदार अवसर': पीयूष गोयल

वाशिंगटन (एजेंसी)। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि अगला जी20 शिखर सम्मेलन भारत के लिए अपनी कई क्षमताओं को दिखाने और कई चुनौतियों का नेतृत्व करने का एक 'बहुत बड़ा अवसर' प्रस्तुत करता है। उन्होंने बुधवार को अमेरिका में हैं। उन्होंने बुधवार को अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कैथरीन टाई के साथ भारत-अमेरिका व्यापार नीति मंच की बैठक की सह-अध्यक्षता की। उन्होंने बुधवार को यहां एक स्वाददाता सम्मेलन में बताया, 'जी20 भारत के लिए दुनिया के सामने कई चुनौतियों को नेतृत्व करने का एक बहुत ही रोमांचक अवसर होने जा रहा है। यह हमारे लिए भारत की कई क्षमताओं को प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर बनने जा रहा है।

भारत ने एक दिवस के भी औपचारिक रूप

से जी20 की अध्यक्षता ग्रहण की। राष्ट्र/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर जी20 नेताओं का अगला शिखर सम्मेलन नौ और 10 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित होने वाला है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि भारत 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के विषय से प्रेरित होकर और आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और महामारी को सबसे बड़ी चुनौतियों के रूप में सूचीबद्ध करके एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करेगा, जिससे सबसे अच्छे तरह से एकजुट होकर लड़ा जा सकता है। गोयल ने कहा कि मोदी को दुनिया के सबसे बड़े नेताओं में से एक माना जाता है और वह कार्रवाई व समाधान में विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा, 'यदि आप याद करते हैं, जब (पूर्व अमेरिकी) उपराष्ट्रपति अल गोर असुविधाजनक सच्चाई के साथ

सामने आए थे, तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सुविधाजनक कार्रवाई पर अपना स्वयं का पक्ष लेकर आए थे, क्योंकि वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो कार्रवाई में विश्वास करते हैं। सारा जीवन, वह एक ऐसे व्यक्ति रहे हैं जो समाधान में विश्वास करते हैं।' जी20 समूह दुनिया की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर-सरकारी मंच है। इसमें अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं। साथ में वे वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 80 प्रतिशत, अंतरराष्ट्रीय व्यापार का 75 प्रतिशत और विश्व जनसंख्या का दो-तिहाई हिस्सा रखते हैं।

उन्होंने कहा कि संविधान के मूलभूत सिद्धांतों पर बहुसंख्यकों द्वारा संचालित हमले को रोकने के लिए मूल संरचना सिद्धांत विकसित किया गया था। उन्होंने प्रश्न किया कि मान लें कि संसद बहुमत से संसदीय प्रणाली को राष्ट्रपति प्रणाली में बदलने के लिए मतदान करती है या राज्य सूची को निरस्त करती है और राज्यों को विशेष विधायी शक्तियों को छीन लेती है। क्या ऐसे संशोधन मान्य होंगे? उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को दोहराया कि संविधान में संशोधन करने और कानून से निपटने के लिए संसद की शक्ति किसी अन्य

उन्होंने कहा कि कोई अपनी मान्यताओं का पालन करने की स्वतंत्रता का लूट ले सकता है, लेकिन इसे दूसरों पर थोपने का कोई अधिकार नहीं है। खान ने कहा, 'मेरे पास अपनी आस्था पर अमल करने की पूरी आजादी, हर अधिकार है, लेकिन मुझे अपनी आस्था दूसरों पर थोपने का कोई अधिकार नहीं है। यह भारतीय सभ्यता की बुनियादी विशेषताएं हैं।' शिखर सम्मेलन में अन्य देशों के युवाओं के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इस मौके पर राज्यपाल ने उम्मीद जताई कि जो लोग भारत में अपनी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, वे अपने-अपने देशों में भारतीय संस्कृति और जीवन शैली के दूत बनेंगे।

आतंकी लखबीर सिंह के इशारे पर जेल में हमला घायल हवालाती की मां ने सीएम मान को लिखा खत

तरनतारन। केंद्रीय जेल गोइंदवाल साहिब में बंद गैंगस्टरों द्वारा तीन हवालातियों और जेल कर्मी को घायल करने के मामले ने बुधवार को नया मोड़ ले लिया। घायल हवालाती करनप्रीत सिंह की मां कुलदीप कौर ने मुख्यमंत्री भगतवंत मान को लिखित शिकायत भेजकर आरोप लगाया है कि कनाडा में बैठे आतंकी लखबीर सिंह के इशारे पर बड़ी साजिश के तहत जेल में हमला हुआ था। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्रीय जेल गोइंदवाल साहिब में 200 से अधिक खतरनाक अपराधी बंद हैं। पंजाबी गायक सिद्धू मुसेवाला हत्याकांड से संबंधित गैंगस्टर दीपक टौनू व उसके साथी मनीष सिंह मंत्रा ने अपने करीब 25 साथियों के साथ मिलकर जेल पर हमला किया था। हमले में उसका बेटा करनप्रीत सिंह फतेह व उसके दो दोस्त मनीष नन्नू व अमन कुमार के अलावा एक जेल कर्मी घायल हो गए थे। कुलदीप कौर ने आरोप लगाया कि जितनी देर तक तीनों हवालाती अधमरे नहीं हुए उतनी देर तक उन्हें नहीं छोड़ा गया। कौर ने शिकायत की कापी डीजीपी पंजाब एडीजीपी जेल एडीजीपी सुरक्षा डीआईजी फिरोजपुर एसएसपी तरनतारन व जिला सेशन जज तरनतारन को भी भेजी गई है।

राजौरी जिले का दौरा करेंगे अमित शाह, आतंकी हमले के बाद सीआरपीएफ और खुफिया एजेंसी के साथ होगी बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह एक आतंकवादी हमले में सात लोगों की मौत के कुछ दिनों बाद जमीनी स्थिति की समीक्षा करने के लिए जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले का दौरा करने वाले हैं। गृह मंत्री उस स्थान का दौरा करेंगे जहां राजौरी जिले के धंगरी में आतंकी भव्यता से ही विदेशी फंडिंग का संकेत मिलता है और इन धार्मिक घरानों को आईएसआई के अलावा अरब देशों से भी फंडिंग मिलती है।

राजौरी जिले के ऊपरी धंगरी गांव में आतंकवादियों द्वारा दो बच्चों सहित नागरिकों की हत्या किए जाने के कुछ दिनों बाद गृह मंत्री की यात्रा हो रही है। आतंकवादी नागरिकों के घरों में घुस

गाए, उनकी पहचान की पुष्टि की और उन पर गोलियां चलाई।

गृह मंत्री का कार्यक्रम

गृह मंत्री सुबह 11.15 बजे जम्मू पहुंचेंगे और 11.30 बजे हेलिकॉप्टर से जम्मू से राजौरी जाएंगे। वह दोपहर 12 बजे राजौरी पहुंचेंगे और फिर आतंकी हमले की जगह का निरीक्षण करने और पीड़ितों के परिवारों से बातचीत करने के लिए धनगरी जाएंगे। शाह दोपहर 1.30 बजे जम्मू लौटेंगे। इसके बाद वह दोपहर 2 बजे राजभवन, जम्मू में नागरिक प्रशासन और सुरक्षा प्रतिष्ठान के अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करेंगे। वह कुछ प्रतिनिधिमंडलों से भी मिल सकते हैं और शाम करीब चार बजे दिल्ली के लिए रवाना होंगे।

शक्तिशाली भारत कभी भी दुनिया के लिए खतरा नहीं हो सकता : आरिफ मोहम्मद खान

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने बहुसंख्यकों को कहा कि शक्तिशाली भारत कभी भी दुनिया के लिए खतरा नहीं हो सकता, क्योंकि इसके सांस्कृतिक मूल्य इसे दूसरों पर हावी होने के बारे में सोचने की इजाजत नहीं देते हैं। राज्यपाल ने यहां राष्ट्रीय युवा दिवस और भारत की जी-20 की अध्यक्षता के तहत आयोजित अंतरराष्ट्रीय युवा शिखर सम्मेलन भारत-2023 का उद्घाटन किया। खान ने कहा, '... दुनिया में हर कोई (इस बात को लेकर) निश्चित हो सकता है कि शक्तिशाली भारत केवल अन्य देशों और मानवता के लिए खतरा हो सकता है, (लेकिन)



शक्तिशाली भारत कभी भी दुनिया में किसी के लिए खतरा नहीं बन सकता है। कभी नहीं ... क्योंकि हमारे सांस्कृतिक मूल्य हमें दूसरों पर हावी होने के मामले में सोचने की इजाजत नहीं देते हैं।'

संविधान सर्वोच्च है संसद नहीं : चिदंबरम

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के संसदीय वर्चस्व पर जोर देने के एक दिन बाद कांग्रेस नेता पी विदर्बम ने गुरुवार को कहा कि संविधान सर्वोच्च है और वीपी के विचार एक चेतवनी संकेत हो सकते हैं। विदर्बम ने कहा कि राज्यसभा के सभापति गलत हैं जब वह कहते हैं कि संसद सर्वोच्च है। संविधान सर्वोच्च है। उन्होंने कहा कि यह चेतवनी हो सकती है वास्तव में सभापति के विचारों को प्रत्येक संविधान-प्रेमी नागरिक को आने वाले खतरों के प्रति चेतवनी के रूप में लेना चाहिए।

उन्होंने कहा कि संविधान के मूलभूत सिद्धांतों पर बहुसंख्यकों द्वारा संचालित हमले को रोकने के लिए मूल संरचना सिद्धांत विकसित किया गया था। उन्होंने प्रश्न किया कि मान लें कि संसद बहुमत से संसदीय प्रणाली को राष्ट्रपति प्रणाली में बदलने के लिए मतदान करती है या राज्य सूची को निरस्त करती है और राज्यों को विशेष विधायी शक्तियों को छीन लेती है। क्या ऐसे संशोधन मान्य होंगे? उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को दोहराया कि संविधान में संशोधन करने और कानून से निपटने के लिए संसद की शक्ति किसी अन्य

प्राधिकरण के अधीन नहीं है और सभी संवैधानिक संस्थाओं न्यायपालिका कार्यपालिका और विधायिका को अपने-अपने तक सीमित रखने की आवश्यकता है। वे बुधवार को राजस्थान विधानसभा में 83वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संविधान में संशोधन करने और कानून से निपटने की संसद की शक्ति किसी अन्य प्राधिकरण के अधीन नहीं है। यह लोकतंत्र की जीवन रेखा है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि जब विधायिका न्यायपालिका और



कार्यपालिका संवैधानिक लक्ष्यों को पूरा करने और लोगों को आकांक्षाओं को साकार करने के लिए मिलकर काम करती हैं तो लोकतंत्र कायम रहता है और फलतः-फूलता है। न्यायपालिका उसी प्रकार कानून नहीं बना सकती जिस प्रकार विधानमंडल एक न्यायिक फैसले को नहीं लिख सकता है।



इंगन की घेराबंदी में पूरी तरह जुटा अमेरिका जापान और ताइवान का मिला साथ

वाशिंगटन। कई सालों से ताइवान पर कब्जे का प्लान बना रहे चीन ने युद्ध की तैयारी तेज कर दी है। ताइवान के आसपास वाले क्षेत्र में चीन दो बार युद्धाभ्यास कर चुका है। अब चीन के बढ़ते खतरे को देखकर अमेरिका ने इंगन की घेराबंदी शुरू कर दी है। बाइडेन ने ताइवान से लेकर जापान तक चीन को घेरने का प्लान तैयार किया है। 2023 में एशिया में चीन के खिलाफ बड़ी तैयारी पूरी होने वाली है। इंगन पर नकेल लगाने अमेरिका ताइवान और जापान एक साथ आ गए हैं। जापान और अमेरिका ने खुलकर एलान भी कर दिया है कि दोनों देश अपने सैन्य रिश्तों को और मजबूत करने वाले हैं। वन चाइना पॉलिसी को अंजाम देने के इरादे से चीन ताइवान के पास अपना युद्धाभ्यास खत्म कर चुका है। लेकिन चीन को जवाब देने के लिए तीन देशों ने बड़ी गतिविधि शुरू कर दी है। ये तीनों देश जापान अमेरिका और ताइवान हैं। जापान के अंदर मौजूद अमेरिकी सेना अपने रुख को और ज्यादा आक्रामक करने जा रही है। हाल ही में बनाई गई मरीन युनिट को अत्याधुनिक जासूसी क्षमता के साथ जापान में तैनात किया जाएगा। ये मरीन सैनिक एटी शिप मिसाइल भी दाग सकते हैं। अमेरिका की अगुवाई वाले इस ग्रुप ने चीन को घेरने का पूरा प्लान सफाई कर दिया है। ताइवान के विमान और सेना युद्धाभ्यास में जुट गए हैं। ताइवान चीन की सेना के मुकाबले ये तैयारी कर रहा है तब जापान ने चीन की बड़ी घेराबंदी शुरू कर दी है। योनागुनी आइलैंड की ताइवान से दूरी महज 110 किलोमीटर है। चीन के ऑजियान से 400 किलोमीटर दूर है। जापान ताइवान के पास योनागुनी आइलैंड पर सैन्य तैयारियां तेज कर रहा है। तैनाती के साथ ही चीन को चेतावनी दी जा रही है। इसके साथ ही अमेरिका ओकिनावा आइलैंड पर मरीन की तैनाती करने वाला है।

दाने-दाने को मोहताज हुआ पाकिस्तान आटा 200 रुपये और टमाटर 150 रुपये किलो

कराची। अपनी गलतियों की सजा भुगत रहा पाकिस्तान अब बद से बदतर स्थिति में पहुंच गया है। वहां लोग दाने-दाने को मोहताज हो चुके हैं। खाने-पीने की चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं। हालात ये हैं कि लोग खाने के लिए लड़ रहे हैं। भ्रामद में लोगों की मौतें हो रही हैं। पाकिस्तान में आटे की कीमत 200 रुपये तक पहुंच गई है। वहीं प्याज 200 टमाटर 150 रुपये पर पहुंच गया है। इकोनोमी को बचाने के लिए पाकिस्तान में बाजार को 8 बजे बंद करने का आदेश दिया गया है। रात 8 बजे के बाद बिजली कट कर दी जाती है। लोगों को कम चाय पीने की सलाह दी जा रही है। पुराने पंखे और बल्ब के निर्माण पर रोक लगा दी गई है। अपने जुगाड़ से पाकिस्तान पैसे बचाना चाह रहा है। वहीं वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) पाकिस्तान को जीने की बढ़ती लागत के बीच भूखमरी के एक बड़े खतरे का सामना करते हुए देख रहा है। इससे चेतावनी दी है कि यह हाइड्रोकॉल आपदाओं और बाधित आपूर्ति से और बढ़ सकता है। रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के बारे में रिपोर्ट बताती है कि मौसम संबंधी प्राकृतिक आपदा और बाधित आपूर्ति का संयोजन लाखों लोगों को लिए भूखमरी के मौजूदा संकट को एक विनाशकारी परिदृश्य में ले जा सकता है। ऊर्जा की कमी (आपूर्तिकर्ता के बंद होने या प्राकृतिक आकस्मिक या पाइपलाइन और ऊर्जा ग्रिड को जानबूझकर नुकसान के कारण) मौसमी आपदा के साथ संयुक्त होने पर व्यापक ब्लैकआउट और कारक परिणाम हो सकते हैं। रिपोर्ट 2023 कहती है कि पाकिस्तान के लिए बुनियादी जरूरतों की सामर्थ और उपलब्धता दोनों ही सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता को बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा अरुणसा का प्रभाव पाकिस्तान में महसूस किया जाना जारी रहेगा और एक साथ खाद्य और ऋण संकट के कारण अस्थिरता को भी बढ़ा सकता है जिसके चलते संभावित तकनीकी-आधारित निर्णय लेने वाले नेतृत्व ढांचे का उदय होगा। रिपोर्ट बताती है कि जीवन-यापन का संकट सबसे बड़ा अल्पकालिक जोखिम है जबकि जलवायु शमन और जलवायु अनुकूलन की विफलता सबसे बड़ी दीर्घकालिक चिंता है। भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और अंतमूर्खी रुख आर्थिक बाधाओं को बढ़ाएंगे और शॉर्ट और लॉन्ग-टर्म दोनों जोखिमों को और बढ़ाएंगे।

समोसा कॉकस में श्री थानेदार के शामिल होने का स्वागत

वाशिंगटन। समोसा कॉकस के भारतीय अमेरिकी सांसदों ने अमेरिकी प्रतिनिधिसभा में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं के एक विशेष समूह में श्री थानेदार के शामिल होने का स्वागत किया है। थानेदार पिछले साल नवंबर में अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए पांचवें भारतीय-अमेरिकी हैं। वह उद्यमी से नेता बने हैं। थानेदार की जीत चार भारतीय अमेरिकी डेमोक्रेटिक सांसदों- डॉ एमी बेरा प्रिमिला जयपाल रो खन्ना तथा राजा कृष्णमूर्ति के अमेरिकी प्रतिनिधिसभा के लिए पुनर्निर्वाचन के बाद हुई है। 'समोसा कॉकस' भारतीय-अमेरिकी सांसदों का एक अनौपचारिक समूह है जो या तो प्रतिनिधि सभा का हिस्सा है अथवा सीनेट का। इस शब्द (टर्म) सांसद कृष्णमूर्ति ने दिया था जिसका फोकस अमेरिकी कांग्रेस में 'देशी' सांसदों की बढ़ती संख्या को रेखांकित करना था। सांसद बेरा ने कहा 'जब मैंने 2013 में कार्यभार संभाला था तब मैं कांग्रेस में इकलौता भारतीय अमेरिकी सदस्य था और इतिहास में तीसरा। उस दिन के बाद से मैं इस बात के लिए प्रबुद्ध था कि हम कांग्रेस में अपने प्रतिनिधित्व को बढ़ाएं। उन्होंने कहा 'पिछले दशक में मेरे साथ भारतीय अमेरिकी-जयपाल खन्ना और कृष्णमूर्ति शानदार सहयोगी बने और इसके लिए मुझे गर्व है। 118वें कांग्रेस के गठन के साथ हमारा संगठन विस्तृत हुआ है क्योंकि इसमें थानेदार शामिल हुए हैं। सांसद जयपाल ने कहा 'जब हमारे पास सबसे विविध कांग्रेस है मुझे एहसास है कि देश भर में प्रत्येक समुदाय तथा संस्कृति के लिए प्रतिनिधित्व कितना मायने रखता है।

प्रिंस हेरी की किताब 'स्पेयर' बना रही है बिक्री के नए रिकॉर्ड

न्यूयॉर्क। राजकुमार हेरी के बारे में जानने के लिए लोगों की उत्सुकता कम होने का नाम नहीं ले रही, क्योंकि उनकी किताब 'स्पेयर' बिक्री के नए रिकॉर्ड बनाती जा रही है। 'पेरिन्स रैंडम हाउस' ने बुधवार को घोषणा की कि पहले दिन हेरी की किताब की 14 लाख से अधिक प्रतियां बिकीं। कंपनी द्वारा प्रकाशित अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा और उनकी पत्नी मिशेल ओबामा की किताब 'बिकमिंग' की 14 लाख प्रतियां एक सप्ताह में बिकी थीं। 'बिकमिंग' 2018 में प्रकाशित हुई थी, तब से दुनियाभर में उसकी 1.5 करोड़ प्रतियां बिक चुकी हैं। 'स्पेयर' के बिक्री आंकड़ों में अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन में बिकने वाले हार्डकवर, ऑडियोबुक और ई-बुक संस्करण शामिल हैं। 'रैंडम हाउस ग्रुप' की अध्यक्ष एवं प्रकाशक गीना सेट्टेला ने एक बयान में कहा, 'स्पेयर' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसके बारे में हमें लगाता था कि हम सब कुछ पहले से ही जानते थे, लेकिन अब हम वास्तव में राजकुमार हेरी को उनके ही शब्दों से समझ पा रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'पहले दिन की बिक्री को देखते हुए स्पेयर है कि पाठक भी इस बात से सहमत हैं कि 'स्पेयर' एक ऐसी पुस्तक है जिसे पढ़ने की जरूरत है और यह एक ऐसी पुस्तक है जिसे प्रकाशित करने पर हमें गर्व है।' राजकुमार हेरी ने एक संस्मरण प्रकाशित करने के अपने फैसले का बचाव किया है, जिसमें ब्रिटेन के शाही परिवार के आंतरिक झगड़े सबके सामने आ गए हैं। हेरी ने कहा था कि यह, 38 वर्षों तक दूसरे लोगों द्वारा 'हेरफेर करके और बातें तोड़-मोड़कर अपने हिसाब से पेश करने' के बाद 'मेरी अपनी कहानी कहने का प्रयास है।' ब्रिटिश के शाही खानदान के राजकुमार ने अपनी पुस्तक 'स्पेयर' में निजी भावनात्मक उतार-चढ़ाव और कटु पारिवारिक संबंधों के बारे में लिखा है और इस वजह से यह सुर्खियों में है। 'स्पेयर' 1997 में हेरी की मां की मृत्यु पर उनके दुख को बयां करती है और लंबे समय तक उनके बड़े भाई प्रिंस विलियम के आगे उनका महत्व कम होने की उनकी पीड़ा को भी व्यक्त करती है।



मैनहटन के माउंट सिनाई अस्पताल के बाहर अपनी मांगों को लेकर विरोध प्रदर्शन करती हुई नर्स।

भारत की सीमा के पास हुई सर्जिकल स्ट्राइक, एफए पर साइबर हमले के लड़ाकू विमानों ने बरसाए बम, लोगों में दहशत, कोई सबूत नहीं: व्हाइट हाउस

आईजोल (एजेंसी)। भारत की सीमा के पास सर्जिकल स्ट्राइक देखने को मिली है और लड़ाकू विमान बम बरसाते भी नजर आए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक म्यांमार के लड़ाकू विमानों ने मिजोरम से सटी भारतीय सीमा के पास बम बरसाए हैं। बता दें कि म्यांमार में इस वक्त सेना का शासन है। 2021 में म्यांमार में तख्तापलट हुआ था। म्यांमार की सेना लोकतंत्र समर्थक विद्रोहियों के साथ लड़ाई लड़ रही है। लोकतंत्र समर्थक शक्तियों को खुनी संघर्ष के जरिए सेना कुचलने में लगी है।

भारत की पूर्वोत्तर की सीमा से सटा एक मुल्क है म्यांमार जिसे एक समय बर्मा के नाम से भी जाना जाता था। जहां 1 फरवरी 2021 को हुए



सैन्य तख्तापलट ने दुनियाभर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। भारत समेत कई देशों ने इस सैन्य तख्तापलट का विरोध भी जताया था। सेना ने आंग सांग सू की सरकार को हटाकर सत्ता पर कब्जा कर लिया था।

कुकी-चिन नेशनल आर्मी (केएनए) के हेडक्वार्टर पर म्यांमार के लड़ाकू विमानों ने हमला किया है। बताया जा रहा है कि जिस जगह पर एयर स्ट्राइक हुई है वहां ट्रेनिंग कैंप चल रहा था। ये कैंप मिजोरम की सीमा से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। द गार्जियन की रिपोर्ट के अनुसार एक दूसरे विद्रोही का कहना है कि इस हमले के बाद दहशत फैल गई है। बता दें ये कोई पहला मौका नहीं है जब विद्रोही गुटों को म्यांमार की सेना की तरफ से निशाना बनाया गया हो। इससे पहले अब्दुल में उत्तरी म्यांमार के काचिन राज्य में सेना ने एक संगीत कार्यक्रम पर एयर स्ट्राइक को अंजाम दिया था। इसमें कम से कम 80 लोगों की जानें चली गई थी।

वाशिंगटन (एजेंसी)। व्हाइट हाउस ने कहा कि पायलटों और अन्य कर्मियों को हवाई युद्धों के बारे में अलर्ट करने वाली एक प्रणाली में तकनीकी खराबी आने के मामले में किसी साइबर हमले के कोई सबूत नहीं हैं। तकनीकी खराबी आने के चलते अमेरिका में सैकड़ों विमानों का परिचालन रोक दिया गया था। उड़ानों पर नजर रखने वाली कंपनी 'फ्लाइट अवेयर' के अनुसार इस खराबी के कारण घंटे, अमेरिका आने तथा यहां से जाने वाली 9,500 से अधिक उड़ानों के परिचालन में देरी हुई, जबकि 1,300 उड़ानें रद्द की गईं। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन ज्यां-पियरे ने अपने दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'फिलहाल

साइबर हमले का कोई सबूत नहीं है। राष्ट्रपति ने परिवहन मंत्रालय को कारणों की पूरी जांच करने और इसके बारे में जानकारी देने का निर्देश दिया है। प्रतिदिन हजारों एअर टिकटों वाले अमेरिकियों की सुरक्षा शीर्ष प्राथमिकता है।' उन्होंने कहा, 'हम सुरक्षित करना चाहते हैं कि वे सुरक्षित हों। यह राष्ट्रपति, परिवहन मंत्रालय खास तौर पर एफएए की शीर्ष प्राथमिकता है। हम कारणों के बारे में जानना चाहते हैं ताकि ऐसा दोबारा न हो।' परिवहन मंत्री पीटे बट्टिगिया ने कहा कि उन्होंने मूल कारणों को जानने के लिए एक प्रक्रिया का निर्देश दिया है और आगे की कार्रवाई के संबंध में कुछ सिफारिशें भी की हैं।

तूफान बाढ़ व भूस्खलन से भारी तबाही: अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया में तूफान से 17 की मौत पानी में डूबे लाखों घर

कैलिफोर्निया (एजेंसी)। अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया में तूफान बाढ़ व भूस्खलन से भारी तबाही मची जिसमें 17 लोगों की मौत हो गई और लाखों घर पानी में डूब गए। क्रिसमस के बाद से लगातार 7वीं बार बुधवार को उत्तरी कैलिफोर्निया में अत्यधिक बारिश हुई जिससे पहले से ही बाढ़ आंधी-तूफान बिजली संकट और जलभरव से प्रभावित इस राज्य की मुश्किलें और बढ़ दीं। मीडिया अनुसार मौसम विज्ञानी जैक टेंटर का कहना है कि बुधवार की बारिश अपेक्षाकृत कमजोर थी और ज्यादातर उत्तर-पश्चिमी कैलिफोर्निया में हुई। उन्होंने इस सप्ताह के अंत में राज्य के अधिकांश हिस्सों में तेज बारिश का पूर्वानुमान जताया। वेदर सर्विस ने कहा कि तूफानों की परेड जारी रहने का अनुमान है जिससे अगले सप्ताह और भी भारी बारिश होगी। सैन फ्रांसिस्को के निचले हिस्से में एक दिवस से अब तक 13.6 इंच (34.5 सेंटीमीटर) बारिश दर्ज की गई है। नेशनल वेदर सर्विस ने कहा कि 26 दिसंबर से 11 जनवरी सुबह तक सैन फ्रांसिस्को इंटरनेशनल एयरपोर्ट ओकलैंड शहर और स्टॉकटन शहर सभी ने इन 16 दिनों में रिकॉर्ड बारिश दर्ज किया है। 26 दिसंबर के बाद से मध्य कैलिफोर्निया के बड़े हिस्सों में सामान्य वार्षिक वर्षा की आधी से अधिक बारिश हुई है। हवा के झोंके पेड़ों को हिला रहे थे और सैन फ्रांसिस्को से लगभग 160 मील

(260 किमी) उत्तर में मेंडोकिनो काउंटी के तट पर सुबह बारिश होती रही। आंधी में कई बड़े पेड़ उखड़ गए और उग्र समुद्र ने तटों पर मलबे का ढेर बिखेर दिया। हाईवे-एक के किनारे यूटिलिटी ट्रकों को कतारें लगी रहीं जिन्हें बिजली कटौती की स्थिति में लोगों को राहत पहुंचाने के लिए तैनात किया गया था।

सड़कें घंसेने व हिमपात से यातायात बाधित

राज्य भर में कई सड़कें मिट्टी के घंसेने और हिमपात के कारण बाधित हो गईं। कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसोम ने मीडिया को बताया कि साल की शुरुआत से अब तक तूफान से कम से कम 17 लोगों की मौत हो चुकी है। अधिकारियों ने बताया कि बुधवार की सुबह एक और पीड़ित पाया गया जब सोमोमा काउंटी में बचावकर्मियों को सड़क से 100 गज (मीटर) दूर बाढ़ के पानी में लगभग 10 फीट (3 मीटर) डूबी एक बार मिली जिसमें एक 43 वर्षीय महिला मृत पड़ी थी। मेंडोकिनो काउंटी में घर पर पेड़गिरने से एक 68 वर्षीय महिला की मौत हो गई। एक ट्री सर्विस बूम ट्रक के 37 वर्षीय चालक की मौत हो गई जब उसका वाहन फिसलकर सड़क से नीचे उतर गया और कई बार पलटा। सेंट्रल कैलिफोर्निया के एक छोटे से गांव सैन मिगुएल के पास बाढ़ के पानी में बह गए 5 साल के बच्चे की तलाश जारी है।

पुरुष डॉक्टरों को नहीं होगी महिलाओं का इलाज करने की इजाजत, तालिबान ने जारी किया नया फरमान

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबानी हुकूमत को सत्ता संभालते हुए साल भर से ज्यादा का वक्त गुजर चुका है। वहां के हालात लगातार सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं। आए दिन अफगानिस्तान में तालिबानी फरमान जारी होते रहते हैं। सितंबर 2021 में उन्होंने केवल लड़कों को स्कूल लौटने की अनुमति दी, अधिकांश किशोर लड़कियों को माध्यमिक विद्यालय से बाहर कर दिया और अफगान महिलाओं को स्वास्थ्य और शिक्षा को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रों में काम करने से रोक दिया। अब खबर है कि तालिबान में एक नया फरमान जारी हुआ है कि वहां की महिलाएं पुरुष डॉक्टरों के पास अपना इलाज नहीं करा सकेंगी।

काबुल के एक इलाके में डॉ. सोना (सरनेम) काबुल के एक इलाके में डॉ. सोना (सरनेम)

नहीं बताया गया। डिप्रेशन से जूझ रही हैं। वह उन लाखों अफगान महिलाओं में से हैं जो अब तालिबान शासित अफगानिस्तान में काम नहीं कर सकती हैं। पिछले साल दिसंबर में डॉ. सोना को काबुल के एक क्लिनिक में नौकरी मिली थी। डॉ.

सोना को हाल ही में बताया गया था जब उन्होंने अपने रोजगार की स्थिति की अंतिम पुष्टि के लिए क्लिनिक को बुलाया था। यह तालिबान सरकार के नए फैसले से ठीक पहले था, जिसमें अस्पतालों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया था कि पुरुष डॉक्टरों को अब महिला रोगियों का इलाज करने की अनुमति नहीं है।



और अब वे संघर्षरत अर्थव्यवस्था के लिए दुनिया से भीख मांग रहे हैं।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने सत्तारूढ़ गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधा

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान के अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान ने बुधवार को सत्तारूढ़ गठबंधन के नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के नेतृत्व में इन धोखेबाजों ने देश की सांसदों को वीडियो के जरिए संबोधित करते हुए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष ने पाकिस्तान के मुकाबले भारत और बांग्लादेश की प्रगति के बारे में भी बात की। खान ने कहा, 'केवल आईटी क्षेत्र का उदाहरण ले भारत का आईटी

संकट से जूझ रहे देश को जलवायु अनुकूल तरीके से पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए 10 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक धनराशि देने का वादा किया है, जिसके बाद खान की यह टिप्पणी आई है। अपनी पार्टी के सांसदों को वीडियो के जरिए संबोधित करते हुए पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष ने पाकिस्तान के मुकाबले भारत और बांग्लादेश की प्रगति के बारे में भी बात की। खान ने कहा, 'केवल आईटी क्षेत्र का उदाहरण ले भारत का आईटी

निर्यात 2000 में एक अरब अमेरिकी डॉलर था और आज यह 140 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया है। और देखें कि हम आज कहां खड़े हैं। दो परिवार - शरीफ और जरदारी - जो 35 साल तक सत्ता में रहे हैं, लेकिन उन्होंने कभी निर्यात पर ध्यान नहीं दिया। खान ने कहा कि यह केवल इसलिए हुआ है क्योंकि धोखेबाजों का एक समूह हम पर थोप दिया गया है। खान ने कहा, 'शहबाज के नेतृत्व में इन धोखेबाजों ने देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है



और अब वे संघर्षरत अर्थव्यवस्था के लिए दुनिया से भीख मांग रहे हैं।

पेरू: अपदस्थ राष्ट्रपति पेद्रो कैस्टिलो के समर्थन में सरकार विरोधी-प्रदर्शन कुस्को तक पहुंचा



लीमा (एजेंसी)। पेरू के राष्ट्रपति डिना बोलुआर्टे की सरकार के खिलाफ प्रदर्शन पर्यटन शहर कुस्को तक पहुंच गया है, जहां बुधवार को हिंसक झड़पें हुईं। एक महीने पहले शुरू हुए इन विरोध-प्रदर्शनों में अभी तक 47 लोगों की जान जा चुकी है। कुस्को में स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों द्वारा शहर के हवाई अड्डे पर कब्जा करने की कोशिश के बाद हुई झड़प में 16 नागरिक और छह पुलिस अधिकारी घायल हो गए। मौके पर कई विदेशी पर्यटक भी मौजूद थे। पेरू के 41 प्रांतों में बोलुआर्टे के खिलाफ और अपदस्थ राष्ट्रपति पेद्रो कैस्टिलो के समर्थन में लोगों ने प्रदर्शन किया और सड़कें जाम कीं। कैस्टिलो को पद से हटाए जाने और उनकी निरपत्तारी को बिना दिखने के

शुरूआत से प्रदर्शन जारी है। विरोध-प्रदर्शन मुख्य रूप से देश के कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहा है, जहां अब भी लोग कैस्टिलो के प्रति वफादारी रखते हैं। वे तत्काल चुनाव कराने, बोलुआर्टे के इस्तीफे, कैस्टिलो की रिहाई और पुलिस से साथ संघर्ष में मारे गए प्रदर्शनकारियों के लिए न्याय की मांग कर रहे हैं। अभी तक सबसे भयावह हिंसा सोमवार को जुलियाका शहर में टिटिकाका झील के पास हुई थी, जिसमें पुलिस के साथ झड़प में 17 लोग मारे गए थे। हिंसा में एक पुलिस अधिकारी की जिंदा जला दिया गया था। पेरू के लोकपाल के कार्यालय के अनुसार, पुलिस के साथ झड़प में अब तक 39 नागरिक मारे गए हैं, जबकि सड़क जाम करने के दौरान हुए हादसों में सात आधे

मौत हुई है। पेरू सरकार ने पुनो में तीन दिन तक रात आठ बजे से सुबह चार बजे तक कर्फ्यू लगाने की घोषणा की है। पुनो में लोग हिंसा में मारे गए 17 लोगों के शवों के ताबूत के साथ चलते नजर आए थे। इस बीच, मानवाधिकारों पर अंतर-अमेरिकी आयोग का एक प्रतिनिधिमंडल विरोध-प्रदर्शनों और पुलिस की प्रतिक्रिया की जांच के लिए पेरू पहुंच गया है। कैस्टिलो की उतराधिकारी डिना बोलुआर्टे ने राष्ट्रपति पद और संसद के लिए 2024 में चुनाव कराने की योजना का समर्थन किया है, जो 2026 के लिए निर्धारित है। उन्होंने सुरक्षा बलों के अत्यधिक बल का इस्तेमाल करने के मामले में भी न्यायिक जांच का समर्थन किया है।

मौत हुई है। पेरू सरकार ने पुनो में तीन दिन तक रात आठ बजे से सुबह चार बजे तक कर्फ्यू लगाने की घोषणा की है। पुनो में लोग हिंसा में मारे गए 17 लोगों के शवों के ताबूत के साथ चलते नजर आए थे। इस बीच, मानवाधिकारों पर अंतर-अमेरिकी आयोग का एक प्रतिनिधिमंडल विरोध-प्रदर्शनों और पुलिस की प्रतिक्रिया की जांच के लिए पेरू पहुंच गया है। कैस्टिलो की उतराधिकारी डिना बोलुआर्टे ने राष्ट्रपति पद और संसद के लिए 2024 में चुनाव कराने की योजना का समर्थन किया है, जो 2026 के लिए निर्धारित है। उन्होंने सुरक्षा बलों के अत्यधिक बल का इस्तेमाल करने के मामले में भी न्यायिक जांच का समर्थन किया है।

संपादकीय

भूगर्भ वैज्ञानिकों और डिपार्टमेंट ऑफ फॉरेंसिकी के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की मानें तो जोशीमट टूटें हुए पहाड़ों के जिस मलबे पर बसा है वह तेजी से धंस रहा है। अब इसे रोकना संभव नहीं लगता। स्थिति काफी गंभीर है और यहां 50 से अधिक घर एक साथ भी ध्वस्त हो सकते हैं। कई वैज्ञानिकों का मानना है कि जोशीमट ग्लेशियर से आए मलबे पर बसा है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्य हैं कि जोशीमट भूस्खलन के मलबे पर बसा है। 1976 में जोशीमट में भूस्खलन की घटनाएं देखी गई थीं।

उत्तराखंड अनियंत्रित और अनियोजित विकास की मार से दरक रहा है और राज्यवासियों के पास चुपचाप आंसू बहाने के अलावा कोई चारा नहीं है। जोशीमट में तो इमारतें कराह ही रही हैं अब जो खबरें आ रही हैं वो तो पूरे उत्तराखंड को दहलाने वाली हैं। खबर है कि जोशीमट से 80 किलोमीटर दूर ऋषिकेश-कणप्रयाग रेल लाइन की रिटैनिंग बाल में भी दरारें आ गई हैं। कणप्रयाग करके के 50 से अधिक घरों में दरारें निवासियों के दिलों में दहशत भर रही हैं। और तो और इससे नितांत अलग रूप पर स्थित मसूरी के लंदन करके से भी सड़कों पर दरारों की सुचनाएं मिल रही हैं। इससे स्थानीय लोगों में भय और घबराहट है। भूगर्भ वैज्ञानिकों और डिपार्टमेंट ऑफ फॉरेंसिकी के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की मानें तो जोशीमट टूटें हुए पहाड़ों के जिस मलबे पर बसा है वह तेजी से धंस रहा है। अब इसे रोकना संभव नहीं लगता। स्थिति काफी गंभीर है और यहां 50 से अधिक घर एक साथ भी ध्वस्त हो सकते हैं। कई वैज्ञानिकों का मानना है कि जोशीमट ग्लेशियर से आए मलबे पर बसा है, लेकिन ऐतिहासिक साक्ष्य हैं कि जोशीमट भूस्खलन के मलबे पर बसा है। 1976 में जोशीमट में भूस्खलन की घटनाएं देखी गई थीं। तब गढ़वाल कमिश्नर के नेतृत्व में सरकार ने एक कमेटी बनाई थी। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में निर्माण कार्यों पर पूरी तरह से रोक लगाने की सिफारिश की थी। इस रिपोर्ट में सीधे तौर पर बड़ेनिर्माण और ब्लास्टिंग नहीं करने की सलाह दी गई थी। इसके बाद भी यहां पर हाइड्रो पावर और आल वेदर रोड के प्रोजेक्ट को मूर्त रूप दिया गया। जोशीमट केदारनाथ, बद्रीनाथ समेत अन्य तीर्थ यात्राओं का एक महत्वपूर्ण गेटवे है। जोशीमट की सड़कों, घर, ऑफिस, मैदान, होटल, स्कूल आदि में

भूमि दरकने के कारण बड़ी-बड़ी दरारें आ गई हैं। जोशीमट में तमाम डेवलपमेंटल गतिविधियां भी रोक दी गई हैं। एक तो मुसीबत की मार दूसरे प्रशासन का बेरुखी भरा रवैया स्थानीय निवासियों को बेवसी के आंसू बहाने पर मजबूर कर रहा है। लोगों को न तो नोटिस दिए गए और न उचित मुआवजा लेकिन प्रशासन खतरनाक घोषित होटलों और भवनों को गिराने पर अड़ा है। मंगलवार को स्थानीय लोगों के विरोध के चलते ध्वस्तीकरण नहीं हो सका था। सिर्फ आधासांसों के भरोसे गुजारा संभव नहीं है। पुनर्वास के लिए फैब्रिकेटेड आवास भी 20 किोमीटर दूर बन रहे हैं। ऐसा करना तो कतई उचित नहीं है।



सूक्ति

देश का उद्धार विलासियों द्वारा नहीं हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना आवश्यक है।
- प्रेमचंद

सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है फिर भी हर एक सत्य ही होगा।
- स्वामी विवेकानंद

लॉफिंग जीठ

एक कंजूस व्यक्ति पहली बार डाक्टर के पास गया। डाक्टर के कक्ष के बाहर उसकी फीस का चार्ट लगा था जिस पर लिखा था- पहली बार दिखाने पर सौ रुपये और दूसरी बार दिखाने पर 50 रुपये. उस व्यक्ति ने 50 रुपए बचाने की गरज से डाक्टर से कहा, डाक्टर साहब नमस्कार, दोबारा आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई. जवाब में डाक्टर हल्का सा मुस्करा दिया. उसके बाद डाक्टर ने उसका मुआयना किया. व्यक्ति ने डाक्टर से पूछा कि आखिर मुझे क्या बीमारी है?

‘कुछ खास नहीं, आपको वही है जो मैं पिछले तीन बार से बताता आ रहा हूं.’ डाक्टर ने जवाब दिया.



एक व्यक्ति गोल्फ खेल रहा था और खेलते हुए वह बार-बार दाएं-बाएं मुड़ता, झुकता और कुछ दूँढ़ने की कोशिश कर रहा था. उसके साथी खिलाड़ी ने झुंझलाकर पूछा कि आखिर तुम यह क्या कर रहे हो. उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि दरअसल दूर की खिड़की से मेरी बीवी मेरा खेल देख रही है और मैं उससे यह वादा करके आया हूँ कि मैं आज एक शानदार शाट लगाकर दिखाऊंगा.

‘बेकार परेशान हो रहे हो. तुम कितनी भी ताकत लगा लो, यहां से शाट मारकर तुम उस खिड़की पर बैठी बीवी को गेंद से नहीं मार सकोगे.’ साथी खिलाड़ी ने जवाब दिया.

गेम चेंजर होगी गहलोत सरकार की योजनाएं

(लेखक- रमेश सराफ धमोरा)

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अपनी सरकार का आखिरी बजट पेश करने की तैयारी कर रहे हैं। इसी साल प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं। इस लिहाज से इस बार के बजट को गहलोत खुद गेम चेंजर मान रहे हैं। मुख्यमंत्री गहलोत कहते हैं कि राजस्थान में इस बार एंटी-इनकम्बेंसी नहीं प्रो-एफिसिएंसी है। इसी के चलते कांग्रेस प्रदेश का 30 साल पुराना हर बार सत्ता बदलने का इतिहास बदलेगी। सरकारी योजनाओं से जनता बहुत खुश है। इसका सबूत है राजस्थान में हुए नो उपचुनाव जिनमें कांग्रेस ने सात में जीत हासिल की है। गहलोत मानते हैं कि राहुल गांधी के नेतृत्व में राजस्थान में करीब 550 किलोमीटर लम्बी भारत जोड़ो पद यात्रा निकली थी। कहीं पर भी एंटी इनकम्बेंसी जैसा माहौल देखने को नहीं मिला। यह दिखाता है कि प्रदेश की जनता कांग्रेस के साथ है। हमारा फोकस इस चुनाव में पिछली बार से अधिक सीटें लाकर सरकार रिपीट करने का है। गहलोत कहते हैं कि हमारी सरकार ने 2018 के जनघोषणा पत्र के 80 प्रतिशत वादों को पूरा कर लिया है और बाकी पूरे हो रहे हैं। कुछ घोषणाएं ऐसी हैं जिन्हें बिना केन्द्र सरकार के सहयोग से पूरा किया जाना संभव नहीं है। हमने 22 लाख किसानों की 14 हजार करोड़ रुपए की कर्जमाफी की है। इसमें राजस्थान सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी बैंक शामिल हैं। हर किसान का नाम और राशि जनघोषणा पोर्टल पर उपलब्ध है। राष्ट्रीयकृत बैंकों से किसानों के कर्ज का उद्योगपतियों की तरह ही वन टाइम सैटलमेंट करने के लिए पत्र लिख चुके हैं। पर बिना केन्द्र सरकार की परमिशन के यह संभव नहीं है। हम स्पष्ट कह चुके हैं कि किसानों का पूरा हिस्सा हम चुकाएंगे। लेकिन केन्द्र सरकार हमारे प्रस्ताव को मंजूरी नहीं दे रही है। इन सब के बीच राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि गहलोत सरकार की कुछ ऐसी लोकप्रिय योजनाएं हैं जो आने वाले विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए चुनौती बनेंगी। राजस्थान में साढ़े सात लाख सरकारी कर्मचारी हैं। मुख्यमंत्री गहलोत ने एलान कर दिया है कि पुरानी पेंशन योजना को फिर से लागू किया जायेगा। भाजपा के सामने ये बड़ी चुनौती हो गई है। केन्द्र सरकार नहीं चाहती है कि किसी भी हालत में पुरानी पेंशन योजना को फिर से लागू किया जाए। अब जहां गहलोत सरकार के सामने पुरानी पेंशन के लिए बजट जुटाने की चुनौती है। वहीं भाजपा के सामने इस दांव से निपटने की। देश के हर प्रदेश में पुरानी पेंशन योजना लागू करने की मांग उठ रही है। इसी साल मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राज्य के एक लाख से ज्यादा सविदा कर्मचारियों को स्थायी कर दिया है। कांग्रेस सरकार का ये बड़ा दांव है। भाजपा के सामने गहलोत के इस दांव को काउंटर करने की बड़ी चुनौती है। देशभर में रसोई गैस की कीमतें 1100 रुपये प्रति सिलेंडर पहुंच चुकी हैं। अशोक गहलोत सरकार ने चार साल पूरे होने पर एलान कर दिया कि बीपीएल कार्ड धारकों और उज्ज्वला गैस योजना के अंतर्गत जिन्हें गैस चूल्हा मिला है। उन्हें 500 रुपये में ही रसोई गैस सिलेंडर दिया जाएगा। इस दायरे में आने वाले लोग सालभर में 12 गैस सिलेंडर सिलिंडर पर ले सकते हैं। इसका फायदा राजस्थान के करीब पांच लाख से ज्यादा परिवारों को मिलेगा। मुफ्त बिजली को लेकर इस समय देश के



कई राज्यों में खूब सियासत हो रही है। राजस्थान सरकार ने पहले से ही इसे लागू कर दिया है। राजस्थान में प्रतिमाह 100 यूनिट बिजली खपत करने वालों को 50 यूनिट बिजली मुफ्त दी जा रही है। 150 यूनिट तक बिजली खपत करने वालों के लिए तीन रुपये प्रति यूनिट और 150 से 300 यूनिट बिजली खपत करने वालों को सरकार की तरफ से दो रुपये प्रति यूनिट की छूट दी जा रही है। प्रदेश में 38.18 लाख घरेलू परिवारों का व 85 लाख किसानों का बिजली बिल शून्य कर दिया गया है। बिजली के लिये सरकार ने 16 हजार करोड़ रुपए का वार्षिक अनुदान दिया है। किसानों को कृषि बिजली कनेक्शनों पर 1000 रुपये प्रति माह का अतिरिक्त अनुदान दिया जा रहा है। आने वाले बजट में बिजली पर अनुदान को और बढ़ाया जा सकता है। राजस्थान सरकार हर साल छात्राओं को मुफ्त स्कूटी बांट रही है। छात्राओं और उनके परिवार के बीच पकड़ बनाने के लिए गहलोत सरकार का ये बड़ा दांव माना जा रहा है। प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना भी चलाई जा रही है। सरकार का दावा है कि वृद्धजन विशेष योग्यजन विधवा और एकल नारी सहित प्रदेश के करीब एक करोड़ लोगों को पेंशन दी जा रही है। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में 10 लाख रुपये तक का निःशुल्क इलाज मिलता है। प्रदेश में अब तक करीब 26 लाख मरीजों को 2963 करोड़ रुपये से निःशुल्क इलाज दिया गया है। आने वाले समय में गहलोत सरकार प्रदेश की 1.35 करोड़ महिलाओं को फी स्मार्टफोन देगी। प्रदेश सरकार के अनुसार राजस्थान में ग्रामीण ओलंपिक दुनिया का सबसे बड़ा खेल आयोजन था जिसमें 30 लाख से ज्यादा लोगों ने भाग लिया था। 26 जनवरी से शहरी ओलंपिक खेलों का शुभारंभ भी होने जा रहा है। बोर्ड परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले 93000 प्रतिभाशाली बच्चों को टैबलेट दिए जाएंगे। इसमें तीन साल तक इंटरनेट फ्री की सुविधा होगी। गहलोत सरकार के अनुसार अब तक 1.32 लाख सरकारी नौकरियां दी गईं। 1.21 लाख सरकारी भूमिगत प्रक्रियाधीन हैं। एक लाख अतिरिक्त पदों पर भर्ती प्रस्तावित है। सरकार का दावा है कि स्कूल और कॉलेज जाने वाली 20000 बालिकाओं को हर साल स्कूटी का वितरण किया जा रहा है। राजीव गांधी

स्कोलरशिप फॉर एकेडमिक एवसीलेंस योजना से हर साल 200 बच्चों की विदेश में पढ़ाई का खर्च सरकार उठा रही है। इंदिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना शहरों में 100 दिन के रोजगार मिलने की गारंटी है। सरकार का दावा अब तक करीब साढ़े तीन लाख जॉब कार्ड जारी किए गए हैं। राज्य सरकार मनरेगा में 25 दिन का अतिरिक्त रोजगार दे रही। प्रदेश में 870 इंदिरा रसोइयां खोली जा चुकी हैं। जहां आठ रुपये में गरीब लोगों को पौष्टिक और गुणवत्तापूर्ण भोजन खिलाया जा रहा। राज्य सरकार प्रति थाली 17 रुपये का अनुदान देती है। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि राजस्थान समेत देश के तमाम लोग महंगाई समेत कई तरह की समस्याओं से परेशान हैं। खासतौर पर कोरोना के बाद से लोगों की आर्थिक स्थिति में बदलाव आया है। नौकरियों का संकट और अलग-अलग तरह की बीमारियों ने लोगों का मनोबल तोड़ दिया है। ऐसे समय सरकार की तरफ से मिलने वाली हर राहत लोगों को अच्छी लगती है। दिल्ली नगर निगम और हिमाचल प्रदेश के नतीजे इस बात के उदाहरण हैं। चुनाव के नजदीक ही सही कांग्रेस ने ये सारे काम करने शुरू कर दिए हैं। ऐसे में अगर कांग्रेस अंदरूनी कलह को सही कर ले तो इन योजनाओं का फायदा आने वाले विधानसभा चुनाव में मिल सकता है। भाजपा के पास इन योजनाओं को काउंटर करने का कोई खास मुद्दा नहीं है।

भाजपा नहीं चाहती है कि पुरानी पेंशन योजना लागू हो। संसद में भाजपा के नेता इसको लेकर बयान दे चुके हैं। इसी तरह सविदा कर्मचारियों को स्थायी करने और सरती बिजली मुहैया करने जैसे मुद्दे भी भाजपा को परेशान कर सकते हैं। राजस्थान में भाजपा के पास सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा कानून व्यवस्था है। इसके अलावा जातीय समीकरण को भी भाजपा मजबूत बनाने की कोशिश करेगी। यदि चुनावी साल में कांग्रेस अपनी सही रणनीति बनाने में कामयाब रहती है तो उसको फिर जीतने से कोई भी पार्टी नहीं रोक पायेगी।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं। इनके लेख देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

आध्यात्मिकता का अर्थ क्रिया में प्रेम है - संत राजिंदर सिंह जी महाराज

एक बार जब हम आत्मा के लिए द्वार खोलते हैं, तो हम अपने जीवन को आंतरिक और बाहरी दुनिया में संतुलित करना सीख सकते हैं। बाहरी दुनिया में अपने उद्देश्य को पूरा करते हुए हमारी आत्मा की खोज करना एक कला है जिसे हम मास्टर कर सकते हैं। आध्यात्मिकता का अर्थ क्रिया में प्रेम है। इसका अर्थ है अपने आध्यात्मिक धन का आनंद लेना और उन्हें हम सभी के साथ साझा करना। हम अपनी सांसारिक जिम्मेदारियों के साथ, अपने भीतर के फलों का आनंद ले कर और मानवता के साथ अपने उपहारों को साझा करके अपनी आध्यात्मिक प्रथाओं को संतुलित करना सीख सकते हैं।

अंतर की ओर देखना भीतर की ओर देखने का अर्थ है कि हम आंतरिक आनंद की स्थिति में हैं। हम ईश्वर और समस्त जीवन के साथ अपनी आत्मा को जुड़ाव के प्रति सचेत हैं। हम उस निडरता से मजबूत होते हैं, जो हमारी आत्मा की पहचान के साथ आती है। हम इस ज्ञान को देखते हैं। इसी तरह, जब भीतर से रहते हैं कि हम अमर हैं। जिस तरह आनंद की स्थिति में, यह दुनिया को

आनंद के रूप में रंगता है। हम जहां भी देखते हैं परमांद को देखते हैं।

बाहर की ओर देखना जबकि हमें ईश्वर को खोजने के लिए इनवर्टर की आवश्यकता है, हमें अपने आसपास के लोगों के साथ व्यवहार करते समय अंतर्मुखी होने की आवश्यकता नहीं है। बाहर की ओर देखने का अर्थ यह है कि हम अपने बाहरी वातावरण में क्या हो रहा है, इसके बारे में अत्यधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हम अपना ध्यान वहां रख सकते हैं जहां हम चुनते हैं। दूसरों की जरूरतों के बारे में हमारी जागरूकता, हमारी एकाग्रता, हमारी संवेदनशीलता और हमारी आध्यात्मिक विकास के साथ हमारी करुणा बढ़ती है। जितना अधिक हम उलटा करते हैं, हम दूसरों की जरूरतों के बारे में जानते हैं। एक संकेत है कि हम आध्यात्मिक रूप से बड़े हो गए हैं कि हम कम आत्म-अवशोषित और स्वार्थी हैं और अधिक मानवतावादी और स्वार्थरहित हैं। जितना अधिक हम अपने भीतर आत्मा के लिए होते हैं, उतना ही हमारे

साथी के लिए प्यार, करुणा और सेवा करते हैं। जब हम अपनी आत्मा की आँखों से बाहरी दुनिया को देखते हैं, तो हम पौधों और जानवरों में भी भगवान के प्रकाश को चमकते हुए देखते हैं, और हम अपने जीवन को इस तरह से जीना शुरू करते हैं जैसे कि सभी जीवित चीजों को संरक्षित करते हैं। जैसे-जैसे हम आध्यात्मिक रूप से बढ़ते हैं, हम जानवरों और पौधों सहित दूसरों के लिए अधिक ग्रहणशील हो जाते हैं। जब हम अन्य लोगों और जीवन के सभी रूपों के साथ व्यवहार करते हैं तो हम अधिक देने और देखभाल करने वाले बन जाते हैं। भीतर की ओर और बाहर की ओर देखना जब हम संतों और मनीषियों के जीवन की जांच करते हैं, तो हम पाते हैं कि उन्होंने अपना जीवन दूसरों की मदद करने के लिए समर्पित कर दिया। वे हंस की तरह थे जो पानी में रहते



प्रसंगत:

लक्ष्य की तलाश

बहुत पुरानी कथा है। एक राजा अपने राजसी दायित्वों से उब गए थे। वह जो भी करते, बेमन से करते। वह चाहते थे कि किसी तरह राजपाट त्याग दें और ईश्वर का साक्षात्कार करें। एक दिन उन्होंने राजसिंहासन अपने उत्तराधिकारी को सौंपा और राजमहल छोड़कर जंगल की ओर चल पड़े। उन्होंने रास्ते में कई विद्वानों के साथ सत्संग किया, कुछ दिनों तक तपस्या की किंतु उनके भीतर अतृप्ति बनी रही। मन में खिन्नता का भाव लिए वह तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। एक दिन चलते-चलते वह काफी थक गए और भूख के कारण निद्राल से होने लगे। वह पगडंडी से उतर एक खेत में रुके और एक पेड़ के नीचे बैठ सुस्ताने लगे। उन्हें देख एक किसान उनके पास जा पहुंचा। वह उनका चेहरा देखकर ही समझ गया वह थके होने के साथ भूखे भी हैं। किसान ने हांडी में उबालने के लिए चावल डाले। चावल की हांडी को आग पर चढ़ाकर उसने राजा से कहा, ‘उठो, यह चावल पकाओ, जब चावल पक जाए तब मुझे आवाज दे देना। हम दोनों इससे पेट भर लेंगे।’ राजा मंत्रमुग्ध होकर किसान की बात सुनते रहे। किसान के वहां से जाने के बाद उन्होंने चावल पकाने शुरू कर दिए। जब चावल पक गए, तो उन्होंने किसान को बुलाया और दोनों ने भरपेट चावल खाए। भोजन करने के बाद किसान काम में लग गया और राजा को ठंडी छांव में गहरी नींद आ गई। उन्होंने स्वप्न में देखा कि एक दिव्य पुरुष खड़ा होकर कह रहा है, ‘मैं कर्म हूँ और मेरा आश्रय पाए बगैर किसी को शांति नहीं मिलती। राजन, तुम भी पुरुषार्थ करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो।’ नींद खुलने पर राजा ने सपने पर विचार किया तब उन्हें कर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली। वह वापस अपने राज्य लौट गए। उन्होंने जनकल्याण को अपना लक्ष्य बना लिया और उसी में रम गए। इससे उन्हें आत्मिक शांति मिली। उन्हें लगा कि यही वह लक्ष्य था जिसे वह अब तक दूँढ़ रहे थे।

रोजाना एक्सरसाइज बिगाड़ सकती है सेहत सेहतमंद बने रहने के लिए हफ्ते में एक दिन का जरूर लें ब्रेक



वजन घटाना हो या फिर टाइप-2 डायबिटीज और हृदयरोग को दूर रखना हो, विशेषज्ञ खानपान पर ध्यान देने के साथ-साथ व्यायाम के लिए भी समय निकालने की सलाह देते हैं। हालांकि, अमेरिकी फिटनेस फर्म 'एलआईटी मेथड' की मानें तो जिम में रोज-रोज पसीना बहाने से फायदा कम और नुकसान ज्यादा हो सकता है। शोधकर्ताओं ने दो हजार लोगों पर अध्ययन के बाद हफ्ते में कम से कम एक दिन एक्सरसाइज से ब्रेक जरूर लेने की सलाह दी है।

लोहे की कड़ाही



आयरन की कमी पूरी करने के लिए बनाते हैं लोहे की कड़ाही में खाना?

भूलकर भी न पकाएं ये चीजें

आयरन की कमी दूर करने के लिए लोग अक्सर लोहे से बने बर्तनों में भोजन पकाते हैं। लोहे के बर्तनों में खाना बनाकर खाने से सेहत को कई लाभ मिलते हैं। एक वयस्क महिला को रोजाना 18 mg आयरन की जरूरत होती है जबकि चार महीने तक नियमित रूप से लोहे के बर्तन में पका खाना बच्चों को दिया जाए तो उनके हीमोग्लोबिन स्तर को भी सुधारा जा सकता है। लोहे के बर्तनों में पके खाने के बेशुमार फायदों के बावजूद क्या आप जानते हैं खाना बनाते समय इन बर्तनों का सही तरह से इस्तेमाल न करने पर आप सेहत से जुड़ी बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं। जानते हैं भोजन पकाने के लिए लोहे के बर्तनों का इस्तेमाल करने से पहले वही कौन सी बातें हैं जिन्हें ध्यान में रखना बेहद जरूरी है।

खट्टी या एसिड से जुड़ी चीजें भूलकर भी लोहे के बर्तन में न पकाएं। ऐसे भोजन लोहे के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं, जिससे भोजन में धातु जैसा अप्रिय स्वाद पैदा हो सकता है। यही वजह है कि कढ़ी, रसम, सांभर या फिर टमाटर से बनने वाली तरी को स्टेनलेस स्टील के बर्तनों में ही पकाने की सलाह दी जाती है। लोहे की कड़ाही में बनी हरी सब्जियों में जल्द कालापन आ जाता है। ऐसा उसमें मौजूद आयरन और लोह तत्व की वजह से होता है। जो सेहत के लिए सही नहीं है। सब्जियों के काले होने की दो वजह होती हैं या तो बर्तन अच्छे से साफ नहीं हुआ है या फिर आपने खाना पकाने के बाद उसे लोहे के बर्तन में ही छोड़ दिया है। ऐसा बिल्कुल न करें। लोहे के बर्तनों में पकाया हुआ भोजन तुरंत किसी अन्य बर्तन विशेषकर कांच या तामचीनी (इनैमल) के बर्तन में पलट दें।

रोजाना लोहे के बर्तनों में खाना पकाना सही नहीं है। सप्ताह में केवल दो से तीन बार ही इनमें खाना बनाएं। लोहे के बर्तनों को धोने के लिए हल्के डिटरजेंट का इस्तेमाल करें। इन बर्तनों को धोते ही तुरंत किसी कपड़े से पोंछ दें। ध्यान रखें इन्हें धोने के लिए कभी भी खुरदरे स्क्रबर या लोहे के जूने का इस्तेमाल न करें। लोहे के बर्तनों को संग्रह करके रखने से पहले इन पर सरसों का तेल की एक पतली परत लगा दें, ताकि उन पर जंग न लग सके। हमेशा बर्तन को साफ और सूखी जगह पर रखें, जहां पानी और नमी की वजह से उन पर जंग न लगे।

इसकी बजाए गाजर या खीरा को लंबा-लंबा काटकर फ्रिज में रख दें। जब यह ठंडी हो जाए तो बच्चों को चबाने के लिए दें। बच्चा इसे चबाकर फेंक देगा और निगलेगा नहीं। साथ ही इससे उसे आराम भी मिल जाएगा वो भी बिना किसी साइड-इफेक्ट के।

मार्केट में कई तरह के टीथर बिस्कुट आते हैं, जिन्हें आप उन्हें दांत निकालते समय खाने के लिए दे सकती हैं।

बच्चे के दांत आने पर मां किन बातों का ख्याल रखें

जब बच्चे का पहला दांत आता है उस दिन से ही पेरेंट्स को उनके दांतों की केयर शुरू कर देनी चाहिए। दरअसल, दांत आने के बाद भी कई पेरेंट्स उनके बड़े होने का इंतजार करते हैं, जोकि गलत है। दांत आने के पहले दिन से बच्चों की केयर शुरू कर देनी चाहिए, ताकि आगे चलकर उन्हें किसी भी तरह की कोई समस्या ना हो।

दांत आने के बाद कैसे हो शिशु की डाइट?

जब बच्चे के दांत आ जाए तो उन्हें लिक्विड डाइट अधिक दें, ताकि उनकी टीथिंग प्रोसेस आसान हो जाए। इसके अलावा उन्हें दही, दूध, दाल का पानी, सब्जियों व फलों की प्यूरी, दलिया, खिचड़ी, फ्रेश जूस आदि दें। जब बच्चे दांत निकालते हैं तो वह मां का दूध नहीं पी पाते ऐसे में उन्हें अधिक से अधिक लिक्विड डाइट दें।

बच्चों को चबाने के लिए प्लास्टिक की चाबियां या टीथर बिल्कुल ना दें क्योंकि इससे कई तरह के साइड-इफेक्ट्स हो सकते हैं।

ऊतकों को मरम्मत का समय मिलेगा

मुख्य शोधकर्ता टेलर नॉरिस के मुताबिक कसरत के दौरान हड्डियों और मांसपेशियों पर काफी दबाव पड़ता है। इससे ऊतकों के टूटने और फटने का खतरा रहता है। हालांकि, व्यक्ति अगर हफ्ते में एक दिन का ब्रेक ले तो ऊतकों को आराम तो मिलता ही है, साथ ही शरीर भी उनकी मरम्मत के लिए समय निकाल पाता है। नॉरिस ने यह भी बताया कि रोज-रोज तीव्र गति की एक्सरसाइज करने और शरीर को ऊतकों की मरम्मत करने का मौका न देने पर हड्डियों व मांसपेशियों में क्षरण की शिकायत पनप सकती है। इससे व्यक्ति फ्रैक्चर के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है।

मांसपेशियों में चोट की आशंका घटेगी

अध्ययन के दौरान देखा गया कि एक्सरसाइज रूटीन में ब्रेक नहीं शामिल करने पर शरीर के बुरी तरह से थक जाने की आशंका भी बनी रहती है। इससे व्यक्ति न सिर्फ मांसपेशियों में खिंचाव और जोड़ों में दर्द की समस्या से जूझने लगता है, बल्कि भावनात्मक स्तर पर सुस्ती भी महसूस करता है। उस स्तर पर पहुंचने पर एक्सरसाइज से लंबे समय तक दूरी बनाने की भी नौबत आ सकती है। नॉरिस ने दावा किया कि बड़े-बड़े खिलाड़ी भी ब्रेक को अपने एक्सरसाइज और अभ्यास रूटीन का हिस्सा बनाना जरूरी समझते हैं। इससे वे तन-मन से खेल पर ज्यादा ध्यान देने के

लिए प्रेरित हो पाते हैं।

दिमाग को भी चाहिए आराम

एक्सरसाइज करते समय शरीर में स्ट्रेस हार्मोन 'कोर्टिसोल' का स्त्राव बढ़ जाता है। इससे मस्तिष्क को यह संदेश जाता है कि शरीर कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है। वह ग्लूकोज को भावी इस्तेमाल के लिए सहेजने लगता है। नतीजतन फैट और कॉर्बोहाइड्रेट के ऊर्जा में तब्दील होने की गति धीमी पड़ जाती है।

नई ऊर्जा जुटाने में मदद मिलेगी

शोधकर्ताओं की मानें तो एक्सरसाइज से ब्रेक मांसपेशियों का घनत्व बढ़ाने में भी असरदार है। इससे शरीर नई ऊर्जा के साथ कसरत

करने के लिए प्रेरित होता है। उन्होंने ब्रेक के दिन अच्छी नींद लेने और पसंदीदा फिल्में देखने की सलाह दी, ताकि 'फील गुड' हार्मोन का स्त्राव हो और मरम्मत की गति में तेजी आए।

कसरत से मन नहीं उचटता

अध्ययन में यह भी देखा गया कि ब्रेक एक्सरसाइज को लेकर बेरियत का भाव नहीं पनपने देता है। अलबता इससे व्यक्ति में कसरत के प्रति ज्यादा दिलचस्पी पैदा होती है। वह महसूस कर पाता है कि एक्सरसाइज से उसके तन-मन में कितने सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं। इसे बरकरार रखना कितना फायदेमंद है।

बच्चों में कान के संक्रमण को न करें नज़रअंदाज़, जानें इसके उपचार

छोटे बच्चे अक्सर कान में दर्द से परेशान रहते हैं, जिसके कारण वह रात को ठीक से सो नहीं पाते हैं और कान खींचकर रोते रहते हैं। कई बार माएं समझ नहीं पाती कि बच्चा ऐसा क्यों कर रहा है। ऐसे में शिशु के कान की जांच करनी चाहिए, क्योंकि अक्सर छोटे बच्चों में कान का संक्रमण अधिक होता है। यदि समय रहते इसका उपचार न किया जाए तो आगे चलकर परेशानी बढ़ सकती है। वयों होता है कान में संक्रमण? विशेषज्ञों के मुताबिक, मौसम बदलने के कारण जिन बच्चों को ज्यादा दिनों तक सर्दी-जुकाम रहता है, उनकी नाक के पिछले हिस्से से कान तक आने वाली यूस्टेकियन ट्यूब की ठीक से कान नहीं कर पाती जिसकी वजह से कान में संक्रमण या सूजन की समस्या हो सकती है। बच्चों में यह ट्यूब बहुत छोटी होती है जिसकी वजह से उन्हें कान में अधिक दर्द होता है। यदि संक्रमण का समय रहते इलाज न किया जाए तो कान में दबाव बढ़कर पर्दे में छेद हो सकता है।

- कान से तरल पदार्थ निकल रहा हो।
- बच्चे को ठीक से सुनाई न दें।
- सर्दी के बाद कान में दर्द होना।

कान में संक्रमण के प्रकार

-चाइल्ट स्पेशलिस्ट के अनुसार, कान में संक्रमण कई तरह के हो सकते हैं:

-कान एक्यूट ओटाइटिस मीडिया
-यह संक्रमण ज्यादा गंभीर नहीं होता है और तीन हफ्ते से कम समय में ठीक हो जाता है।

क्रॉनिक ओटाइटिस मीडिया

इसमें कान से तरल पदार्थ निकलता है और इस संक्रमण को ठीक होने में 6 हफ्ते से ज्यादा का समय लग सकता है।

कान की हड्डी में संक्रमण

यह संक्रमण गंभीर होता है और ज्यादा दिनों तक रह सकता है। इसमें कान की हड्डी में संक्रमण फैल जाता है। इसे ठीक करने के लिए ऑपरेशन करना पड़ता है।

कान के संक्रमण का उपचार

बाल रोग विशेषज्ञों के अनुसार, कान के संक्रमण का उपचार कई बातों पर निर्भर करता है जैसे संक्रमण कितना गंभीर है, बच्चे को कितनी जल्दी कान का संक्रमण होता है, संक्रमण कितने समय से है, बच्चे की उम्र, संक्रमण की वजह और क्या इससे बच्चे को सुनने में दिक्कत हो रही है आदि। सभी बच्चों में कान का संक्रमण अलग तरह का होता है इसलिए उनका उपचार भी अलग तरीके से किया जाता है। कुछ मामलों में डॉक्टर सिर्फ दर्द के लिए दवा देते हैं और संक्रमण अपने आप ठीक हो जाता है। जबकि कुछ मामलों में एंटीबायोटिक से भी इलाज किया जाता है, लेकिन यदि संक्रमण वायर्स के कारण होता है तो एंटीबायोटिक्स नहीं दिया जाता है।



संक्रमण के लक्षण

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, जब बच्चे को कान का संक्रमण होता है तो वह हमेशा चिड़चिड़ा हो जाता है और रोता रहता है। संक्रमण आमतौर पर 6 से 18 महीने के बच्चों में ज्यादा देखा गया है, वैसे यह किसी भी उम्र के बच्चे में हो सकता है, लेकिन चूकि शिशु बोल नहीं पाते, इसलिए उनमें कान के संक्रमण के लक्षणों की पहचान के लिए बहुत सतर्क रहने की जरूरत है। निम्न लक्षण दिखने पर बच्चे के कान की जांच करें यदि वह-

- बार-बार कान खींचता है। आमतौर पर दर्द की वजह से वह ऐसा करते हैं।
- बहुत अधिक रोता रहे।
- ठीक से सो नहीं पाता है।

दांत निकालते समय बच्चों को क्यों लगते हैं दर्द?

6 महीने से डेढ़ साल के बीच में दांत आ जाते हैं। जैसे जन्म लेना एक नेचुरल प्रोसेस है उसी तरह बच्चों के दांत आना भी एक नेचुरल प्रक्रिया है। मगर, इस दौरान बच्चों को कई तरह की परेशानियां झेलनी पड़ती है जैसे चिड़चिड़ापन, दूध ना पीना, रात में बार-बार उठना, उल्टी या दस्त लगना आदि।

बच्चों के दांत आने पर होने वाले दर्द से कैसे राहत दिलाएं?

. सबसे पहले अपने नाखूनों को काट लें। अब हाथों को अच्छी तरह साफ करके बच्चों के मसूड़ों पर मसाज करें। इससे उन्हें राहत मिलेगी।

. मलमल के साफ कपड़े को फ्रिज में रखकर ठंडा कर लें। फिर उससे दांतों के मसूड़ों की मसाज करें। यह दर्द के लिए कोल्ड टीथर की तरह काम करेगा।

. आप डॉक्टर की सलाह से बच्चों को पेरासिटामोल ड्रॉप्स दवा भी दे सकती हैं लेकिन बिना प्रीकंपेशन बच्चों को कोई भी मेडिसिन ना दें।

खाने पीने के लिए कैसे चीजें दें?

जब भी बच्चा दांत निकाल रहा हो तो उसकी डाइट में कैल्शियम फूड्स की मात्रा बढ़ा दें। इसके अलावा डॉक्टर की सलाह से आप उन्हें सिरप या विटामिन सी ड्रॉप दे सकते हैं।

दांत निकालते समय बच्चों को बयों लमती है दर्द?

दरअसल, जब बच्चा दांत निकालता है तो दर्द से राहत पाने के लिए वह तरह-तरह की चीजें मुंह में डालता है। मगर, उनपर कई तरह के जर्म्स, बैक्टीरिया होते हैं जो मुंह से पेट में जाकर दर्द का कारण बनते हैं। इसके लिए आप पहले तो बच्चों के खिलौनों को डेटॉल से अच्छी तरह साफ करें।

दूसरा डॉक्टर से सलाह से शिशु को कोलिक ड्रॉप्स दें, ताकि उनके पेट में दर्द ना हो।

बच्चे को चबाने के लिए क्या दें?

बच्चों को चबाने के लिए प्लास्टिक की चाबियां या टीथर बिल्कुल ना दें क्योंकि इससे कई तरह के साइड-इफेक्ट्स हो सकते हैं।





अमीरों की सूची में चौथे नंबर पर खिसके अडानी

नई दिल्ली। भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस गौतम अडानी को नए साल पर झटका लगा है। अडानी दुनिया के अमीरों की सूची में चौथे नंबर पर खिसक गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर इंडेक्स के मुताबिक बुधवार को उनकी नेटवर्थ में 91.2 करोड़ डॉलर की गिरावट आई और यह 118 अरब डॉलर रह गई। अमेरिका की दिग्गज ई-कॉमर्स कंपनी एमएजॉन के फाउंडर जेफ बेजोस अब अमीरों की लिस्ट में उनसे आगे निकल गए हैं। बेजोस की नेटवर्थ में बुधवार को 5.23 अरब डॉलर की तेजी आई और उनकी नेटवर्थ एक झटके में 118 अरब डॉलर पहुंच गई। हालांकि दशमलव के बाद के अंतर को देखा जाए तो बेजोस की नेटवर्थ अडानी से मामूली रूप से ज्यादा है। पिछले साल अडानी की नेटवर्थ में 4.4 अरब डॉलर का इजाफा हुआ था और वह सबसे ज्यादा कमाई करने वाले अरबपति थे। लेकिन इस साल उनकी नेटवर्थ में अब तक 2.44 अरब डॉलर की गिरावट आई है। वैसे दुनिया के अमीरों की सूची में फ्रांस के कारोबारी बर्नार्ड अल्बोर्ट 182 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ पहले नंबर पर हैं। इस साल उनकी नेटवर्थ उनकी नेटवर्थ में 20 अरब डॉलर का इजाफा हुआ है। यानी उन्होंने रोजाना करीब दो अरब डॉलर कमाए हैं। टेस्ला स्पेसएक्स और ट्विटर के मालिक एलन मस्क 132 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस सूची में दूसरे नंबर पर हैं। बुधवार को उनकी नेटवर्थ में 2.78 अरब डॉलर का इजाफा हुआ। वैसे इस साल उनकी नेटवर्थ में अब तक 4.84 अरब डॉलर का नुकसान हुआ है। इस सूची में अमेरिका के दिग्गज इन्वेस्टर वॉरेन बफेट 111 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं। माइक्रोसॉफ्ट के फाउंडर बिल गेट्स छठे नंबर पर हैं। फेसबुक की फेड कंपनी मेटा प्लेटफॉर्म के सीईओ मार्क जकरबर्ग 50.1 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ इस लिस्ट में 24 वें नंबर पर हैं।

आईडीपी एजुकेशन ने 4 नए कार्यालयों के शुभारंभ के साथ भारत में अपनी उपस्थिति मजबूत की

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय शिक्षा सेवाओं में अग्रणी आईडीपी ने भारतीय छात्रों को उनके विदेशी शिक्षा के सपने को साकार करने में मदद करने के लिए फरवरी तक भारत में चार नए कार्यालय शुरू करने की घोषणा की है। इस विस्तार के साथ, आईडीपी के देश भर में 73 कार्यालय हो जाएंगे, जो अंतरराष्ट्रीय शिक्षा उद्योग में पूरे भारत में अधिकतम भौतिक उपस्थिति के मार्ग पर अग्रसर होगा। कार्यालयों का उद्घाटन दिल्ली (उत्तर), दिल्लीसुखनगर (हैदराबाद), खन्ना (पंजाब) और होशियारपुर (पंजाब) में किया जाएगा। विदेशों में अध्ययन की बढ़ती मांग को देखते हुए, आईडीपी ने बड़ी टीमों के साथ गुवाहाटी, जम्मू, कालीकट और त्रिशूर में अपने मौजूदा कार्यालयों को विकसित करने की भी योजना बनाई है। अपनी विश्व स्तरीय कार्सलिंग और डिजिटल इनोवेशन के साथ, आईडीपी एजुकेशन छात्रों को ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूएस, यूके, न्यूजीलैंड और आयरलैंड जैसे लोकप्रिय देशों में और सर्वोत्तम गंतव्य, कार्यक्रमों और संस्थान को चुनने, आवेदनों और वीजा आवश्यकताओं को पूरा करने, शिक्षा ऋण, स्वास्थ्य बीमा, घन हस्तांतरण सेवाओं, आवास, विदेशी बैंक खाते, सिम कार्ड, आदि के लिए आवेदन करने से लेकर विदेश में संपूर्ण अध्ययन सहायता प्रदान करता है। इस अवसर पर, दक्षिण एशिया और मॉरीशस, आईडीपी एजुकेशन के क्षेत्रीय निदेशक, पीयूष कुमार ने कहा, हमारा उद्देश्य भारत में हर छात्र के विदेश में अध्ययन के सपने को पूरा करना है। इन चार नए कार्यालयों को लॉन्च करना हमारे ग्राहकों के करीब आने और उन्हें बेहतर सेवाएं प्रदान करने की दिशा में एक और कदम है। हम सभी अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आवश्यकताओं के लिए एक-स्टॉप समाधान होने पर गर्व करते हैं और अपने ग्राहकों को उनके अध्ययन-विदेश यात्रा के हर हिस्से में समर्थन करते हैं। अंतरराष्ट्रीय शिक्षा उद्योग तीव्र गति से बढ़ रहा है। 2024 तक लगभग 18 लाख भारतीय छात्रों के विदेश में अध्ययन करने की उम्मीद है, कुल छात्र खर्च 75 अरब डॉलर से अधिक है।

सैमसंग गैलेक्सी एस23 सीरीज का प्री-ऑर्डर अब भारत में उपलब्ध

नई दिल्ली। (एजेंसी)

सैमसंग ने गुरुवार को घोषणा की कि उसकी आगामी फ्लैगशिप सीरीज गैलेक्सी एस23 के लिए प्री-रिजर्वेशन भारत में शुरू हो गया है। हेटिक दिग्गज ने एक बयान में कहा कि ग्राहक कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट, सैमसंग एक्सक्लूसिव स्टोर्स, अमेजन और प्रमुख रिटेल आउटलेट्स पर 1,999 रुपये की टोकन राशि का भुगतान कर नई गैलेक्सी एस सीरीज को प्री-रिजर्व कर सकते हैं। एस23 सीरीज के स्मार्टफोन को प्री-रिजर्व करने वाले उपभोक्ताओं को 5,000 रुपये का लाभ मिलेगा। हालांकि,

इसका फायदा उठाने के लिए उपभोक्ताओं को 31 मार्च से पहले डिवाइस को खरीदकर एक्टिवेट करना होगा। गैलेक्सी अनफोल्ड इवेंट को सैमसंग न्यूजरूम इंडिया पर 1 फरवरी रात 11.30 बजे लाइव स्ट्रीम किया जाएगा। कंपनी ने कहा, नई गैलेक्सी एस सीरीज इस बात का प्रतीक होगी कि सैमसंग प्रीमियम अनुभव को कैसे परिभाषित करता है। सैमसंग अपने नए फ्लैगशिप के साथ क्या शानदार है इसके लिए नए मानक स्थापित कर रहा है। 2020 की शुरुआत में कोविड-19 महामारी के प्रकोप को प्री-रिजर्व करने वाले उपभोक्ताओं को 5,000 रुपये का लाभ मिलेगा। हालांकि,



नया युग आ रहा है। हमारे नवाचार लोगों के लिए अविश्वसनीय सभावनाओं को सक्षम करने के लिए डिजाइन किए गए हैं।



नई दिल्ली में ऑटो एक्सपो में बीवाय डी ऑटो थ्री कार पेश करती हुई मॉडल्स।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

मुम्बई।

मुम्बई शेयर बाजार गुरुवार को गिरावट के साथ बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही उर्जा पीएसई और बैंकिंग शेयरों में बिकवाली हावी होने के कारण आई है। इसके अलावा एमएमसीजी इफ। और मेटल इंडेक्स भी नुकसान के साथ ही लाल निशान पर बंद हुए हैं। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 147.47 अंक करीब 0.25 फीसदी की गिरावट के साथ 59958.03 के स्तर पर बंद हुआ है। वहीं 50

शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 37 अंक तकरीबन 0.21 फीसदी नीचे आकर 17858.20 के स्तर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एसबीआई लाइफ इश्योरेंस उल्टा ट्रेड सीमेंट लासिन एंड टूबो एचसीएल टेक्नोलॉजीज और डॉ रेडडी लैबोरेटरीज के शेयर शीर्ष पर रहे जबकि डेविस लैब रिलायंस इंडस्ट्रीज बीपीसीएल एक्सिस बैंक और टाटा मोटर्स के शेयर नीचे आये। गेट कारोबारी सत्र में भी बाहर गिरावट पर बंद हुआ था। इससे पहले आज सुबह भी बाजार गिरावट पर खुला। बाजार में बीते दो सत्र में रही गिरावट का

असर गुरुवार सुबह भी देखा गया और कारोबार की शुरुआत नुकसान के साथ हुई तो किन कुछ ही देर बाद निवेशकों का भरोसा वापस लौट आया और वे खरीदारी करने लगे जिससे बाजार में बढ़त दिखने लगी। संकेत से सुबह 23 अंक गिरकर 60083 पर खुला और कारोबार शुरू किया जबकि निफ्टी 25 अंकों की बढ़त बनाकर 17921 पर खुला और कारोबार की शुरुआत हुई। गिरावट पर खुलने के बावजूद निवेशकों का भरोसा वापस आने लौटने पर वे खरीदारी करने लगे निवेशकों ने शुरुआत से ही एचसीएल

टेक्नोलॉजी कोल डे डिया टाइम कंपनी पावर ग्रिड कॉर्प और ग्रे सिम इंडस्ट्रीज जैसी कंपनियों पर दांव लगाया और जमकर खरीदारी की। वहीं ए शियन पेट एक्सिस बैंक बीपीसीएल और कोटक मेहिंद्रा बैंक जैसी कंपनियों के शेयरों में बिकवाली हो रही है। केवल निफ्टी मेटल और बैंक में ही गिरावट दिख रही इसके अलावा बाकी सभी सेक्टर अलग हरे निशान में कारोबार कर रहे हैं। बाजार पर लगातार दबाव बने होने का सबसे बड़ा कारण विदेशी निवेशकों की ओर से पूंजी की निकासी करना है।

अमेरिका और कनाडा में अब यूपीआई से कर सकेंगे भुगतान

नई दिल्ली।

अमेरिका और कनाडा में अब दूसरे देशों में रहने वाले भारतीयों (एनआरआई) के लिए यूपीआई से भुगतान शुरू कर दिया गया है। नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के मुताबिक एनआरआई अब अपने इंटरनेशनल मोबाइल नंबर के जरिए पेमेंट्स के लिए यूपीआई यानी यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस का उपयोग कर सकेंगे। एनआरआई को यूपीआई के जरिए पेमेंट्स करने के लिए उनके नॉन रजिस्टर्ड वाले बैंक अकाउंट को यूपीआई से लिंक करना होगा। नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ने भागीदार बैंकों को इसकी तैयारी के लिए 30 अप्रैल तक का समय दिया है। बता दें कि केवल छह वर्षों में यूपीआई के जरिए लेनदेन में भारी उछाल देखने में आया है। दिसंबर माह में 12 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा के लेनदेन यूपीआई के जरिए किए गए। एनआरआई अकाउंट दूसरे देशों में रहने वाले भारतीयों को विदेश से होने वाली कमाई को भारत में ट्रांसफर करने में मदद करता है। जबकि एनआरआई अकाउंट उनकी भारत में होने वाली आय को मैनेज करने में सहायता करता है। यूपीआई के जरिए वे अब सिर्फ इन्हीं अकाउंट से भुगतान कर सकेंगे। शुरुआत में यूपीआई के जरिए भुगतान की सुविधा 10 देशों में रह रहे एनआरआई को मिलेगी। वे अब इंटरनेशनल मोबाइल नंबर का उपयोग करके भी यूपीआई से पेमेंट्स कर पाएंगे। इन देशों में सिंगापुर अमेरिका ऑस्ट्रेलिया कनाडा हांगकांग ओमान कतर सऊदी अरब संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ब्रिटेन (यूके) आदि शामिल हैं।



अपनी अपकमिंग मिड साइज एसयूवी का होडा कार्स इंडिया ने पहला ऑफिशियल स्केंच जारी किया है। कंपनी ने कहा है कि इसे भारतीय बाजार में 2023 की गर्मियों के दौरान लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च होने पर यह कार देश में हुंडई क्रेटा को टक्कर देगी। भारत में बड़े स्तर पर सर्वे के बाद होडा रिसर्च एंड डेवलपमेंट एशिया पैसिफिक कंपनी लिमिटेड में इसको डिजाइन किया गया है। होडा की नई एसयूवी न केवल हुंडई क्रेटा को टक्कर देगी बल्कि किआ सेल्टोस मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा और टोयोटा हायराइडर के साथ भी लॉन्गहंड्स में होगी। एसयूवी के बारे में कुछ डिजाइन बिस्तर पहले से ही पटना में हुंडई के रफ एंड टफ लुक दिया जा सके। होडा एसयूवी को पेट्रोल

मिड साइज एसयूवी देगी हुंडई क्रेटा को टक्कर

- 2023 की गर्मियों के दौरान किया जाएगा लॉन्च

नई दिल्ली।

अपनी अपकमिंग मिड साइज एसयूवी का होडा कार्स इंडिया ने पहला ऑफिशियल स्केंच जारी किया है। कंपनी ने कहा है कि इसे भारतीय बाजार में 2023 की गर्मियों के दौरान लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च होने पर यह कार देश में हुंडई क्रेटा को टक्कर देगी। भारत में बड़े स्तर पर सर्वे के बाद होडा रिसर्च एंड डेवलपमेंट एशिया पैसिफिक कंपनी लिमिटेड में इसको डिजाइन किया गया है। होडा की नई एसयूवी न केवल हुंडई क्रेटा को टक्कर देगी बल्कि किआ सेल्टोस मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा और टोयोटा हायराइडर के साथ भी लॉन्गहंड्स में होगी। एसयूवी के बारे में कुछ डिजाइन बिस्तर पहले से ही पटना में हुंडई के रफ एंड टफ लुक दिया जा सके। होडा एसयूवी को पेट्रोल



हेजलैप के साथ एक अपराइट नोज मिलेगा। सेंट्रल में 'होडा' लोगो के साथ एक मल्टी-स्लैट फ्लैट ग्रिल होगा। जापानी ब्रांड किआ सेल्टोस की किताब से सीख लेते हुए एक कनेक्टेड डीआरएल थीम पेश कर सकता है। लॉन्च आर्च पर क्लैडिंग के साथ बड़े-बड़े पहिये होने की उम्मीद की जा सकती है ताकि इसे रफ एंड टफ लुक दिया जा सके। होडा एसयूवी को पेट्रोल

इंजनों के साथ पेश किए जाने की उम्मीद है। इसमें 1.5 लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन और 1.5 लीटर हाइब्रिड इंजन देखने को मिल सकता है। पहले वाला इंजन 5वें जन्मशेन की होडा सिटी से लिया गया है। बाद वाले को सिटी हाइब्रिड से लिया गया है। ट्रांसमिशन विकल्प भी समान होने जा रहे हैं यानी 1.5-नैचुरली एस्पिरेटेड इंजन के लिए 5-स्पीड

मैनुअल और सीवीटी ऑटोमैटिक यूनिट और स्ट्रॉंग-हाइब्रिड वर्जन के लिए ई-ड्रिव यूनिट मिलेगा। स्केंच के अनुसार एसयूवी एचआर-वी के ग्लोबल वर्जन की याद दिलाती है। हालांकि कुछ अपडेट हैं जो इसे एचआर-वी से अलग करते हैं। अपडेटेड अमेज आर्किटेक्चर पर आधारित होडा की नई एसयूवी की लंबाई लगभग 4.2-4.3 मीटर होगी।

कच्चा तेल महंगा कई शहरों में पेट्रोल और डीजल की कीमत बढ़ी

- ब्रेंट क्रूड का भाव 3 डॉलर बढ़कर 83 डॉलर प्रति बैरल हुआ

नई दिल्ली। (एजेंसी)

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में अचानक उछाल दिख रहा है और ब्रेंट क्रूड का भाव करीब 3 डॉलर बढ़कर 83 डॉलर प्रति बैरल के आसपास पहुंच गया है। यूपी से बिहार तक कई शहरों में तेल के दाम बढ़ गए हैं। हालांकि दिल्ली और मुंबई जैसे चारों महानगरों में गुरुवार को भी पेट्रोल-डीजल के भाव स्थिर बने हुए हैं। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार गौतमबुद्ध नगर में पेट्रोल 5 पैसे महंगा होकर 96.65 रुपये लीटर हो गया है जबकि डीजल 5 पैसे बढ़कर 89.82 रुपये लीटर पहुंच गया है। गाजियाबाद में पेट्रोल 32 पैसे महंगा हुआ और 96.58 रुपये लीटर पहुंच गया जबकि डीजल 30 पैसे बढ़कर 89.75 रुपये लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 13 पैसे सस्ता हुआ और 96.44 रुपये लीटर हो गया जबकि डीजल 12 पैसे गिरकर 89.64 रुपये लीटर है। बिहार की

राजधानी पटना में पेट्रोल के दाम 21 पैसे बढ़कर 107.80 रुपये लीटर जबकि डीजल 20 पैसे बढ़कर 94.56 रुपये लीटर हो गया है। कच्चे तेल पिछले 24 घंटे के दौरान बढ़त पर दिखाई दिया। ब्रेंट क्रूड का भाव करीब 3 डॉलर उछल के साथ 82.90 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया है। डब्ल्यूटीआई का भाव भी करीब 3 डॉलर बढ़कर 77.64 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76



रुप प्रति लीटर नोएडा में पेट्रोल 96.65 रुपये और डीजल 89.82 रुपये प्रति लीटर है। गाजियाबाद में पेट्रोल 96.58 रुपये और डीजल 89.75 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.44 रुपये और डीजल 89.64 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 107.80 रुपये और डीजल 94.56 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

ट्रैफिगुरा ने नायरा एनर्जी में अपनी हिस्सेदारी बेची

नई दिल्ली।

वैश्विक स्तर पर जिस कारोबार से जुड़ी कंपनी ट्रैफिगुरा ने नायरा एनर्जी में अपनी हिस्सेदारी बेच दी है। हालांकि कंपनी ने सीदे की राशि का खुलासा नहीं किया है। मेरुटेरा समूह को पूर्व में जेनेरा गुप होल्डिंग के नाम से जाना जाता था। इटली की कंपनी ने विशेष उद्देश्यीय इकाई हारा कैपिटल सार्ल के जरिये हिस्सेदारी खरीदी है। ट्रैफिगुरा ने कहा कि उसने नायरा एनर्जी में अपनी 24.5 प्रतिशत हिस्सेदारी हारा कैपिटल सार्ल को बेच दी है। नायरा एनर्जी को पूर्व में एस्सार ऑयल के नाम से जाना था। इसे रूस की कंपनी रोसनेफ्ट की अगुवाई वाले समूह ने 2017 में खरीदा था। निवेश समूह विशेष उद्देश्यीय इकाई केसानी एंटरप्राइजेज कंपनी लिमिटेड ने 49.13 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की थी। इस समूह में जिनेवा की ट्रैफिगुरा और रूस का निवेश समूह यूनाइटेड कैपिटल पार्टनर्स (यूसीपी) शामिल था। नायरा एनर्जी के पास गुजरात के वडीनार में रिफाइनरी है। इसकी मौजूदा क्षमता दो करोड़ टन सालाना है। उसके पास 6500 से अधिक पेट्रोल पंपों का नेटवर्क है।

वैगनआर को फरवरी 2022 में किया कंपनी ने अपडेट

- कीमत 5.47 लाख से 7.20 लाख रुपये के बीच

नई दिल्ली। (एजेंसी)

जानी-मानी कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने वैगनआर को फरवरी 2022 में मामूली अपडेट किया था। वर्तमान में इसकी कीमत 5.47 लाख रुपये से 7.20 लाख रुपये के बीच है। इसकी लगातार बिक्री के चलते वैगनआर 2022 सीवाय में देश में सबसे अधिक बिकने वाली पैसेंजर कार बन गई है क्योंकि इसने पिछले साल से 221850 यूनिट्स हो चुकी हैं और यह भारत में एकमात्र कार रही जिसकी दो लाख से ज्यादा यूनिट्स सेल हुईं। पहली बार 1999 में पेश की गई वैगन आर वर्तमान में अपनी थर्ड जेनरेशन में है। 2019 में टॉल राइडिंग हेचबैक को नए प्लेटफॉर्म एकदम नए डिजाइन और ज्यादा जगह वाले इंटीरियर के साथ सबसे बड़ा अपडेट मिला। वैगनआर की लागत 3 मिलियन यूनिट्स पहले से ही सड़कों पर हैं - जो इसे भारत में अब तक की सबसे सफल कारों में से एक बनाती है। 5-सीटर नियमित पेट्रोल और सीएनजी वैरिएंट में आता है जबकि टूर-स्पेसिफिक मॉडल भी उपलब्ध है। यह डुअलजेट डुअल वीवीटी तकनीक के साथ 1.0-लीटर तीन-सिलेंडर पेट्रोल और



1.2-लीटर 4-सिलेंडर पेट्रोल इंजन से शक्ति प्राप्त करता है और बेहतर प्यूवल कंजप्शन के लिए एक आइडल स्टार्ट/स्टॉप सिस्टम है। छोटे 1.0-लीटर इंजन से 25.19 के एमपीएल का तगड़ा माइलेज मिलाता है। 1.2-लीटर के सीरीज डुअलजेट डुअल वीवीटी इंजन को दावा की गई प्यूवल एफिशिएंसी 24.43 के एमपीएल है। मारुति सुजुकी वैगनआर में नेविगेशन के साथ 7 इंच का स्मार्टप्ले स्टूडियो टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम क्लाउड-आधारित सेवाएं डुअल फ्रंट एयरबैग इबीडी के साथ एबीएस रिवर्स पार्किंग सेंसर एमपीटी में हिल-होल्ड असिस्ट चार स्पीकर स्टीयरिंग व्हील शामिल हैं। माउंटेड कंट्रोल के साथ एक सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर वगैरह। टूर एच3 विशेष रूप से पेट्रोल और एस-सीएनजी संस्करणों में सेल किया जाता है। इस कार का सीएनजी संस्करण (एलएक्सआई और वीएक्सआई टिम्स में उपलब्ध) में 34.05 किमी/किग्रा है।

फार्मर्स फील्ड स्कूल में यूपी के किसान सीख रहे प्राकृतिक खेती का हुनर

लखनऊ। यूपी में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार तेजी से बढ़ रही है। इसी कारण फार्मर्स फील्ड स्कूल में इस खेती का हुनर सीख रहे हैं। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुसार कृषि विभाग ने इस पर काम करना भी शुरू कर दिया है। इस क्रम में अब तक करीब 10 हजार किसानों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि केन्द्र द्वारा वित्त पोषित नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग योजना के तहत प्रदेश के 49 जिलों में 85710 हेक्टेयर में प्राकृतिक खेती कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसमें 1714 क्लस्टर गठित कर फार्मर्स फील्ड स्कूल कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसी प्रकार राज्य सेक्टर से बुन्देलखंड के समस्त जिलों (बांदा, हमीरपुर, ललितपुर, जालौन, झांसी, महोबा) में 470 क्लस्टरों (23500 हेक्टेयर) में दो चरणों में प्राकृतिक खेती कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 में 235 क्लस्टर गठित कर फार्मर्स फील्ड स्कूल के आयोजन का कार्यक्रम वर्तमान में संचालित है। दोनों योजनाओं अन्तर्गत फार्मर्स फील्ड स्कूल संचालन में कुल 93369 कृषक प्रतिभाग कर रहे हैं। कृषि विशेषकों की मानें तो रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से हमारी धरती बाढ़ हो रही है। इसी कारण फार्मर्स फील्ड स्कूल में इस खेती का हुनर सीख रहे हैं। मुख्यमंत्री की मंशा के अनुसार कृषि विभाग ने इस पर काम करना भी शुरू कर दिया है। इस क्रम में अब तक करीब 10 हजार किसानों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। उल्लेखनीय है कि केन्द्र द्वारा वित्त पोषित नेशनल मिशन ऑन नेचुरल फार्मिंग योजना के तहत प्रदेश के 49 जिलों में 85710 हेक्टेयर में प्राकृतिक खेती कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसमें 1714 क्लस्टर गठित कर फार्मर्स फील्ड स्कूल कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसी प्रकार राज्य सेक्टर से बुन्देलखंड के समस्त जिलों (बांदा, हमीरपुर, ललितपुर, जालौन, झांसी, महोबा) में 470 क्लस्टरों (23500 हेक्टेयर) में दो चरणों में प्राकृतिक खेती कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 में 235 क्लस्टर गठित कर फार्मर्स फील्ड स्कूल के आयोजन का कार्यक्रम वर्तमान में संचालित है। दोनों योजनाओं अन्तर्गत फार्मर्स फील्ड स्कूल संचालन में कुल 93369 कृषक



भारतीय टीम ने मनाया कोच द्रविड़ का 50वां जन्मदिन

कोलकाता। दूसरा एकदिवसीय क्रिकेट मैच खेलने कोलकाता पहुंची भारतीय टीम ने अपने मुख्य कोच मुझे य राहुल द्रविड़ का 50वां जन्मदिन यहां उत्साह के साथ केक काटकर मनाया। इस अवसर पर द्रविड़ को क्रिकेट प्रशंसकों के साथ ही साथी खिलाड़ियों ने भी बधाई दी। द्रविड़ बुधवार को जैसे ही होटल पहुंचे टीम के सदस्यों ने उन्हें बधाई दी और जमकर जश्न मनाया। टीम ने पहले से ही होटल में द्रविड़ के जन्मदिन को मनाया जा इंतजाम कर रखा था। बीसीसीआई के आधिकारिक ने भी टिवटर हैंडल पर द्रविड़ की बर्थडे पार्टी का एक वीडियो भी साझा किया है। इस वीडियो में देखा जा सकता है कि टीम इंडिया गुवाहाटी से निकलने के बाद कोलकाता के अपने होटल में पहुंची। यहां पहुंचते ही सबसे पहले द्रविड़ के जन्मदिन का केक काटा गया। सभी खिलाड़ी अपने सूटकेस के साथ इस वीडियो में देखे जा सकते हैं। वहीं द्रविड़ इस दौरान टीम के प्यार से उत्साहित दिखे और उन्होंने केक काटकर उसे सभी साथियों के साथ साझा किया।



कलाकार सुदर्शन पटनायक ने रेत से हॉकी मैदान बनाया

भुवनेश्वर, (एजेंसी)।

उड़ीसा के भुवनेश्वर में शुक्रवार से शुरू हो रहे विश्वकप हॉकी को लेकर लोगों में जबरदस्त उत्साह है। विश्वकप मैच कलिंगा स्टेडियम और राऊरकेला के बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में खेले जाएंगे। इसका उद्घाटन मैच भुवनेश्वर में शुक्रवार को अर्जेंटीना और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा जबकि फाइनल मुकाबला 29 जनवरी को भुवनेश्वर में खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट को देखते हुए हॉकी प्रशंसक भी सक्रिय हो गए

हैं। रेत कलाकार सुदर्शन पटनायक ने कटक में महानदी के तट पर रेत से हॉकी मैदान की तस्वीर उकेरी। इसके साथ ही इसमें सभी देशों के झंडे लगाने के साथ ही 5 हजार गेंदों का भी इस्तेमाल किया गया है। इसे बनाने में 16 लोग लगे और दो दिन का समय लगा। एक लघु कलाकार सत्यनारायण महाराणा ने 30 मिनट के अंदर ही नक्काशी और पेंटिंग के साथ-साथ दो छोटी हॉकी स्टिक बना दी। इसमें एक स्टिक की ऊंचाई 5 मिलीमीटर और चौड़ाई 1 मिलीमीटर है तो दूसरी की ऊंचाई

1 सेंमी. और चौड़ाई 1 मि.मी. है। वहीं ओडिशा के कलाकार एल ईश्वर राव ने 750 मिलीलीटर की एक बोतल के भीतर हॉकी स्टिक और गेंद की लघु कलाकृति बनाई है। राव ने कहा कि पैसिल की नोंक से उन्हें यह कलाकृति उकेरने में 10 दिन का समय लगा। उड़ीसा सरकार ने ओली का राज्य में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए आधिकारिक शुभंकर बनाया है। ओली समुद्री कछुए हैं



ओली समुद्री कछुए हैं लिए आधिकारिक शुभंकर बनाया है। ओली समुद्री कछुए हैं

विश्व के नंबर एक खिलाड़ी अलकाराज 2023 सत्र की शुरुआत अर्जेंटीना ओपन से करेंगे

नई दिल्ली, (एजेंसी)

विश्व के नंबर एक टेनिस खिलाड़ी स्पेन के कार्लोस अलकाराज 2023 सत्र की शुरुआत ब्यूनस आयर्स में अर्जेंटीना ओपन से करेंगे जो 11 फरवरी से खेला जाएगा। टूर्नामेंट आयोजकों ने टिवटर पर यह घोषणा की। अर्जेंटीना ओपन के आयोजकों ने बुधवार को टिवटर पर कहा, नंबर एक खिलाड़ी अर्जेंटीना में खेलेंगे। 19 वर्षीय स्पेन के खिलाड़ी पहली बार हमारे टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे। अलकाराज को ट्रेनिंग में दूएँ पैर की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन से हटना पड़ा था। सत्र के पहले ग्रैंड स्लैम से हटने के कारण अलकाराज अपनी नंबर एक रैंकिंग गंवा सकते हैं लेकिन यह ऑस्ट्रेलियन ओपन के परिणाम पर निर्भर करेगा। नोवक जोकोविच, कैम्पर रुड और स्टेफानोस सितसिपास नंबर वन बनने की होड़ में हैं। अलकाराज के साथ अर्जेंटीना ओपन में



इटली के लॉरेन्जो मुसेटी, ऑस्ट्रेलिया के डोमिनिक थिएम, ब्रिटेन के कैमरून नोरी और स्थानीय हीरो डिएगो श्वार्जमेन जुड़ेंगे। सत्र के पहले ग्रैंड स्लैम से हटने के कारण अलकाराज अपनी नंबर एक रैंकिंग गंवा सकते हैं लेकिन यह ऑस्ट्रेलियन ओपन के परिणाम पर निर्भर करेगा। नोवक जोकोविच, कैम्पर रुड और स्टेफानोस सितसिपास नंबर वन बनने की होड़ में हैं।



एडिलेड इंटरनेशनल 2: खाचानोव को हराकर ड्रेपर सेमीफाइनल में

एडिलेड, (एजेंसी)

जैक ड्रेपर ने कारेन खाचानोव को गुरुवार को लगातार सेटों में 6-4, 7-6(3) से हराकर एडिलेड इंटरनेशनल 2 के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। खाचानोव ने एडिलेड से सात दिन पहले ड्रेपर को हराया था लेकिन 21 वर्षीय ब्रिटिश खिलाड़ी ड्रेपर ने उस हार का बदला चुका लिया और पिछले छह महीने में अपने तीसरे एटीपी सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। 20 वर्षीय ड्रेपर का सेमीफाइनल में स्वीडन के माइकल यमर या दक्षिण कोरिया के सून-क्यो क्रोन से मुकाबला होगा। खाचानोव ने एडिलेड से सात दिन पहले ड्रेपर को हराया था लेकिन 21 वर्षीय ब्रिटिश खिलाड़ी ड्रेपर ने उस हार का बदला चुका लिया और पिछले छह महीने में अपने तीसरे एटीपी सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया।

हॉकी विश्वकप में 200 गोल का आंकड़ा हासिल करने उतरेगी भारतीय टीम

तीन टीमों के नाम हैं 200 से अधिक एक टीम के नाम हैं 300 से ज्यादा गोल

नई दिल्ली, (एजेंसी)।

उड़ीसा में शुक्रवार से शुरू हो रहे विश्वकप हॉकी मुकाबले भुवनेश्वर और राऊरकेला में खेले जाएंगे। इसमें भारतीय टीम के पास अपने 200 गोल करने का अवसर होगा। अब तक हुए विश्वकप के 14 सत्र के 605 मुकाबलों में 2433 गोल हुए हैं। विश्वकप में अब केवल तीन टीमों ने ही 200 से अधिक गोल किये हैं। भारतीय टीम ने अब तक 199 जर्बकि स्पेन ने 176 गोल किये हैं। भारतीय टीम का अपना पहला मुकाबला स्पेन से है जिसमें भारतीय टीम गोल करने के मामले में 200 का आंकड़ा हासिल करना चाहेगी। 200 से

ज्यादा गोल करने वाली टीमों हैं पाकिस्तान 235 नीदरलैंड 267 जबकि 300 से अधिक गोल का रिकार्ड केवल एक टीम ऑस्ट्रेलिया के नाम है। ऑस्ट्रेलिया ने 305 गोल किये हैं। पाक टीम इस बार क्वालीफाई नहीं कर पाने के कारण विश्वकप का हिस्सा नहीं है।

भारतीय टीम ने जिस प्रकार ऑस्ट्रेलिया को टक्कर दी थी उससे उसकी शानदार लय का पता चलता है।

नीदरलैंड :

तीन बार की विश्वकप विजेता इस डच टीम के नाम विश्व कप में 100 मैच खेलने वाली एकमात्र टीम होने का रिकार्ड है। नीदरलैंड ने 100 मैचों में 267 गोल किए हैं। पॉल लिटजेंस 25 व्यक्तिगत गोलों के साथ इस टूर्नामेंट में भी सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी हैं। इस बार भी टीम विश्वकप की प्रबल दावेदार के तौर पर उतरेगी



ऑस्ट्रेलिया :

विश्व कप में 300 से अधिक गोल करने वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम भी तीन बार की विश्वकप विजेता है। ऑस्ट्रेलिया ने 92 मुकाबलों में सबसे ज्यादा 305 गोल दगे हैं। ऑस्ट्रेलिया का जीत प्रतिशत भी 75 है जोकि सबसे ज्यादा है। इस बार भी वह खिताब की प्रबल दावेदार मानी जा रही है।

ऑस्ट्रेलियन ओपन: स्वीयाटेक का पहला मुकाबला नीमियर से

मेलबर्न, (एजेंसी)

विश्व की पहले नंबर की खिलाड़ी पोलैंड की इंगा स्वीयाटेक का वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में शुरुआती मुकाबला जर्मनी की जूल नीमियर से होगा जबकि दूसरी सीड द्यूनीशिया की ओस जाबोर का मुकाबला स्लोवेनिया की तमारा जिदानसेक से होगा। गुरुवार को निकाले गए ड्रा के अनुसार स्वीयाटेक, अमेरिका की जैसिका पेगुला और कोको गॉफ ड्रा के टॉप हाफ में हैं जबकि दूसरी सीड जाबोर, चौथी सीड फ्रांस की कैरोलिना गार्सिया और पांचवीं

सीड बेलायूस की आर्यना सबावले का निचले हाफ में हैं। स्वीयाटेक को हाल में पेगुला के हाथों यूनाइटेड कप में लगातार सेटों में हार का सामना करना पड़ा था। पेगुला ने अमेरिका की पहले यूनाइटेड कप में खिताबी जीत दिलाई थी। सातवीं सीड कोको गॉफ अपने अभियान की शुरुआत चेक गणराज्य की कैटरिना सिनियकोवा के खिलाफ मुकाबले से करेंगी। उनका दूसरे दौर में 2021 की यूएस ओपन चैंपियन एमा रादुकानू और क्वार्टरफाइनल में स्वीयाटेक से मुकाबला हो सकता है। जाबोर ड्रा के निचले हाफ में चौथी सीड कैरोलिना गार्सिया, नंबर

पांच आर्यना सबावले का निचले हाफ में हैं। स्वीयाटेक को हाल में पेगुला के हाथों यूनाइटेड कप में लगातार सेटों में हार का सामना करना पड़ा था। पेगुला ने अमेरिका की पहले यूनाइटेड कप में खिताबी जीत दिलाई थी। सातवीं सीड कोको गॉफ अपने अभियान की शुरुआत चेक गणराज्य की कैटरिना सिनियकोवा के खिलाफ मुकाबले से करेंगी। उनका दूसरे दौर में 2021 की यूएस ओपन चैंपियन एमा रादुकानू और क्वार्टरफाइनल में स्वीयाटेक से मुकाबला हो सकता है। जाबोर ड्रा के निचले हाफ में चौथी सीड कैरोलिना गार्सिया, नंबर



स्वीयाटेक से मुकाबला हो सकता है।

आर्थर ने पाक क्रिकेट टीम का कोच बनने से इंकार किया

काराची। दक्षिण अफ्रीका के मिकी आर्थर ने पाकिस्तान क्रिकेट टीम का कोच बनने से इंकार कर दिया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आर्थर को कोच बनने का प्रस्ताव दिया था पर आर्थर तैयार नहीं हुए। इससे पीसीबी को कारा झटका लगा है और उसकी कोच की तलाश का सिलसिला लंबा होता जा रहा है। इससे पहले पीसीबी ने कहा कि मुख्य कोच के पद के लिए वह दक्षिण अफ्रीका के आर्थर से बात कर रहे थे पर उन्होंने कहा कि काउंटी टीम डर्बीशर के साथ अनुबंध के कारण वह कोच नहीं बन सकते। पीसीबी ने कहा 'उनका डर्बीशर के साथ दीर्घकालिन अनुबंध है। हमने उनसे सलाहकार के तौर पर काम करने के लिए भी कहा पर विभिन्न कारणों से यह संभव नहीं हो सका। वहीं कहा जा रहा है कि आर्थर इसलिए पाक कोच नहीं बनना चाहते क्योंकि उन्हें पाकिस्तान क्रिकेट के माहौल पर भरोसा नहीं है इसका कारण यह है कि बोर्ड के साथ उनका पुराना अनुभव अच्छा नहीं रहा था। विश्व कप 2019 के दौरान पीसीबी प्रबंधन ने उनसे कहा था कि उनका अनुबंध बढ़ाया जाएगा पर पाक टीम के सेमीफाइनल में पहुंचने के बाद भी ऐसा नहीं किया गया।

ऑस्ट्रेलियन ओपन: नडाल को मुश्किल ड्रा मिला

मेलबर्न। विश्व के नंबर दो खिलाड़ी और शीप वरीयता प्राप्त स्पेन के राफेल नडाल को वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में मुश्किल ड्रा मिला है और मेलबर्न पार्क में उनका पहला मुकाबला ब्रिटेन के इन-फॉर्म खिलाड़ी स्कॉट ड्रेपर से होगा। नडाल 22 ग्रैंड स्लैम खिताबों के साथ टेनिस इतिहास के सबसे सफल खिलाड़ी हैं। 2021 के विजेता और 21 ग्रैंड स्लैम जीतने वाले जोकोविच और ऑस्ट्रेलिया की निक किर्गियोस ड्रा के निचले हाफ में उसी क्वार्टर में हैं और उनका क्वार्टरफाइनल में मुकाबला हो सकता है। गत चैंपियन नडाल को हाल में अपने फॉर्म से संघर्ष करना पड़ा था और

यूनाइटेड कप में वह ड्रेपर के हमबतन कैमरून नोरी से हार गए थे जिससे स्पेन के यूनाइटेड कप में आगे नहीं जा पाया था। यदि नडाल ब्रिटिश स्टार के रूप में पहली बाधा पार कर जाते हैं तो दूसरे राउंड में उनका मुकाबला अमेरिका के मैकेजी मैक्डोनाल्ड या ब्रेंड नाकाशिमा में से किसी एक से होगा। नडाल के क्वार्टर में सातवीं सीड दानिल मेदवेदेव हैं। पिछले वर्ष यूएस ओपन में नडाल को हराने वाले 16वीं सीड फ्रांसिस तियाफो चौथे दौर में नडाल के प्रतिद्वंद्वी हो सकते हैं। ड्रा के निचले हाफ में नौ बार के ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन और ऑस्ट्रेलिया के निक किर्गियोस भी उसी

क्वार्टर में हैं। 19वीं सीड किर्गियोस का तीसरे दौर में नौवीं सीड होल्जर रने से और चौथे राउंड में पांचवीं सीड आंद्रेई रुबलेव से मुकाबला हो सकता है। वह क्वार्टरफाइनल में जोकोविच से भिड़ सकते हैं। जोकोविच अपने अभियान की शुरुआत स्पेन के रॉबर्टे कार्बालेस बायेना के खिलाफ मुकाबले से करेंगे। रुबलेव की पहले राउंड में भिड़त पूर्व नंबर तीन और 2020 के ऑस्ट्रेलियन ओपन फाइनलिस्ट डोमिनिक थिएम से होगी। 13वीं सीड मातियो बेरेट्टीनी अपनी शुरुआत पूर्व नंबर



उसी क्वार्टर में हैं। 19वीं सीड किर्गियोस का तीसरे दौर में नौवीं सीड होल्जर रने से और चौथे राउंड में पांचवीं सीड आंद्रेई रुबलेव से मुकाबला हो सकता है। वह क्वार्टरफाइनल में जोकोविच से भिड़ सकते हैं। जोकोविच अपने अभियान की शुरुआत स्पेन के रॉबर्टे कार्बालेस बायेना के खिलाफ मुकाबले से करेंगे।

एक एंड्री मरे के खिलाफ मुकाबले से करेंगे। ड्रा के निचले हाफ में नौ बार के ऑस्ट्रेलियन ओपन चैंपियन और ऑस्ट्रेलिया के निक किर्गियोस भी क्वार्टरफाइनल में जोकोविच से भिड़ सकते हैं। जोकोविच अपने अभियान की शुरुआत स्पेन के रॉबर्टे कार्बालेस बायेना के खिलाफ मुकाबले से करेंगे।

मलेशिया ओपन: प्रणय क्वार्टर फाइनल में, तृसा-गायत्री दूसरे दौर में हारी

कुआलालम्पुर, (एजेंसी)

सीजन की अपनी विजयी शुरुआत को जारी रखते हुए एचएस प्रणय गुरुवार को मलेशिया ओपन सुपर 1000 बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए, जबकि राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता तृसा जॉली और गायत्री गोपीचंद गुरुवार को यहां महिला युगल के प्री-क्वार्टर फाइनल में बुलारिया की गैब्रिएला स्तोएवा और स्टेफानी स्तोएवा से हार गईं। एक्सियाटा एरिना के कोर्ट 1 पर खेलते हुए, वर्ल्ड नंबर 8 प्रणय ने एक घंटे से अधिक के मैच में 19वीं रैंकिंग के चिको आरा ड्वी वाड्योर्पो पर 21-9, 15-21, 21-16 से जीत दर्ज की और हेड टू हेड में इंडोनेशियाई के रिकार्ड के बराबरी की। इससे पहले, दिन में तृसा जॉली और गायत्री गोपीचंद महिला युगल राउंड-आफ-16 मैच में बुलारिया की गैब्रिएला और स्टेफानी से 13-21, 21-15, 17-21 से हारकर बाहर हो गईं। एक्सियाटा एरिना के कोर्ट 1 पर खेलते हुए, वर्ल्ड नंबर 8 प्रणय ने एक घंटे से अधिक के मैच में 19वीं रैंकिंग के चिको आरा ड्वी वाड्योर्पो पर 21-9, 15-21, 21-16 से जीत दर्ज की और हेड टू हेड में इंडोनेशियाई के रिकार्ड के बराबरी की।



संक्षिप्त समाचार



बैडमिंटन: इंडिया ओपन 2023 ने इवेंट के निर्माण में अपना नया पार्टनर चुना

नई दिल्ली में 17 से 22 जनवरी तक आयोजित होने वाले इंडिया ओपन 2023 बैडमिंटन टूर्नामेंट ने आधिकारिक पार्टनर भागीदार के रूप में भारत की अग्रणी मल्टीलेक्स ब्रूइला, आईनॉक्स लीजर लिमिटेड के साथ करार किया है। इसकी घोषणा यहां गुरुवार को की गई। केडी जाधव इंडोर हॉल, आईजी स्टेडियम, नई दिल्ली में खेला जाने वाला योनेक्स स्नराइज इंडिया ओपन 2023, भारत में अब तक का सबसे बड़ा पेशेवर बैडमिंटन टूर्नामेंट होगा और इसमें कुछ शीर्ष अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेंगे। साझेदारी के तहत, आईनॉक्स भारत में अपने सिनेमाघरों और अपने डिजिटल प्लेटफॉर्म पर टूर्नामेंट का प्रचार करेगा। आईनॉक्स टूर्नामेंट के प्रचार के लिए सिनेमा लॉबी और एलईडी डिस्प्ले में भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) को भी जगह उपलब्ध कराएगा। केडी जाधव इंडोर हॉल, आईजी स्टेडियम, नई दिल्ली में खेला जाने वाला योनेक्स स्नराइज इंडिया ओपन 2023, भारत में अब तक का सबसे बड़ा पेशेवर बैडमिंटन टूर्नामेंट होगा और इसमें कुछ शीर्ष अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भाग लेंगे।

राजस्थान रॉयल्स के प्रशंसक एसए20 में फरेरा के प्रदर्शन से खुश होंगे : आरपी सिंह

नई दिल्ली। एसए20 के रोमांचक मुकाबले में, विकेटकीपर-बल्लेबाज डोनोंवन फरेरा के शानदार प्रदर्शन की बदौलत जोबर्ग सुपर किंग्स ने डरबन के सुपर जायंट्स को 16 रनों से हरा दिया। दिसंबर 2022 में आईपीएल 2023 मिनो प्लेयर नीलामी में राजस्थान रॉयल्स द्वारा 50 लाख में खरीदे गए फरेरा ने 40 गेंदों में 82 रन बनाए। फरेरा ने जोबर्ग सुपर किंग्स के 27/4 पर सिमटने के बाद पांच छक्के और आठ चौके लगाए। उनकी धमकेदार पारी ने सुपर किंग्स को प्रतिस्पर्धी स्कोर 190/6 तक पहुंचा दिया। फरेरा ने अपने करियर में अब तक 27 टी20 मैच खेले हैं और 158 से अधिक की प्रभावशाली स्ट्राइक रेट के साथ 621 रन बनाए हैं। भारत के पूर्व बाएं हाथ के तेज गेंदबाज आरपी सिंह ने बताया कि आईपीएल 2023 में फरेरा को खरीदना राजस्थान रॉयल्स के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। उन्होंने वायकॉम18 के हवाले से कहा, रॉयल्स के प्रशंसक फरेरा के साथ खुश होंगे। वह टीम में बहुत विविधता लाते हैं और अच्छी तरह से क्षेत्ररक्षण करते हैं। हालांकि उन्होंने एक कैच छोड़ दिया था। लेकिन बल्लेबाजी दौरान उन्होंने बड़े शांत खेले और दबाव को अच्छी तरह से झेला। (रोमारियो) शेफर्ड के साथ साझेदारी मैच का टर्निंग पॉइंट थी। उन्होंने वायकॉम18 के हवाले से कहा, रॉयल्स के प्रशंसक फरेरा के साथ खुश होंगे। वह टीम में बहुत विविधता लाते हैं और अच्छी तरह से क्षेत्ररक्षण करते हैं। हालांकि उन्होंने एक कैच छोड़ दिया था। लेकिन बल्लेबाजी दौरान उन्होंने बड़े शांत खेले और दबाव को अच्छी तरह से झेला। (रोमारियो) शेफर्ड के साथ साझेदारी मैच का टर्निंग पॉइंट थी।



रियाद में स्पेनिश सुपर कप फुटबॉल में खेलते हुए वेलेथिया और रियल मैड्रिड के खिलाड़ी।

मुख्यमंत्री की उपस्थिति में गांधीनगर में 'मिलेट महोत्सव' मनाया गया



गांधीनगर । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत के परम्परागत कृषि उत्पादों मिलेट्स (मोटे धान) की खेती व आहार में उसके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए को गई हिमायत की सफलता के चलते संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय किया है। इसके फलस्वरूप भारत सहित समस्त दुनिया के देशों में मिलेट की उपयोगिता के विषय में जनजागृति

किसान मुख्यमंत्री आवास आयोजित में इस मिलेट महोत्सव में सहभागी हुए। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर मिलेट्स उत्पादक किसानों के विभिन्न उत्पादों को देखा। महोत्सव में सभी उपस्थितों ने मिलेट्स से बने व्यंजनों का सेवन कर आनंद उठाया। भूपेंद्र पटेल ने मिलेट महोत्सव में अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हमारे परम्परागत कृषि उत्पादों मोटे धान-मिलेट्स को विश्व स्तर पर प्रोत्साहन देने की सफलता संयुक्त राष्ट्र संघ (यूने) द्वारा अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मनाए जाने की घोषणा से प्राप्त की है। उन्होंने कहा कि अब तो पश्चिमी देश भी स्वास्थ्य के प्रति सजग हुए हैं और ऐसे पौष्टिक मिलेट्स तथा प्राकृतिक खेती से उत्पादित अनाज का अधिक से अधिक उपयोग करने को प्रेरित हुए हैं।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मनाए जाने से प्रधानमंत्री की यह संकल्पना साकार होगी कि विश्व के देश भी बाजरे ज्वार रागी मक्के जैसे हमारे परम्परागत धानों को अपनाएँ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने परम्परागत कृषि उत्पादों-मिलेट्स (मोटी धान फसलों) को विश्व भर में बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र में वर्ष 2023 को 'इयर ऑफ मिलेट्स' के रूप में मनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। विश्व के 70 से अधिक देशों द्वारा प्रधानमंत्री के इस प्रस्ताव को समर्थन दिए जाने से संयुक्त राष्ट्र की साधारण महासभा ने वर्ष 2023 को 'इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स' के रूप में मनाने की घोषणा की है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव के बाद अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 को मनाने का यह दूसरा प्रस्ताव है जिसमें प्रधानमंत्री का 'सर्वे भवतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' का भाव एवं 'वर्ल्ड हेल्थ एण्ड वेलनेस' की आकांक्षा समाहित है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मनाने के लिए गुजरात सहित समग्र भारत वर्ष में मिलेट्स की खेती तथा मिलेट्स के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम होने वाले हैं। गुजरात में मिलेट्स का उपयोग बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में इस समग्र वर्ष के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इसके अंतर्गत राज्य के 8 महानगरों में 'मेगासिटी मिलेट एक्सपो' आयोजित होंगे जिससे शहरी क्षेत्रों में मिलेट्स के उपयोग को बढ़ावा मिलेगा और मिलेट्स उत्पादक किसानों तथा उपभोक्ताओं को कॉमन प्लेटफॉर्म मिलेगा।

अमेरिका से लौटे वृद्ध दंपति ने चाकू से हाथ और गला काटा पत्नी की मौत पति गंभीर

अहमदाबाद। शहर के मकरवा अंडरपास के निकट ऑर्चर्ड एक्जोटिका एपार्टमेंट निवासी वृद्ध दंपति के चाकू से हाथ और गला काटा आत्महत्या की कोशिश से सनसनी फैल गई। इस घटना में 69 वर्षीय पत्नी की मौत हो गई। जबकि 13 वर्षीय वृद्ध को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उनकी स्थिति नाजुक बताई जा रही है। घटना के कारणों का फिलहाल पता नहीं चला है सरखेज पुलिस मामले की जांच शुरू की है। जानकारी के मुताबिक अहमदाबाद के मकरवा अंडरपास के निकट स्थित ऑर्चर्ड एक्जोटिका एपार्टमेंट में आज सुबह वृद्ध

दंपति के आत्महत्या करने की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई। एपार्टमेंट के बी ब्लॉक के सातवीं मंजिल पर रहने वाले किरणभाई भाऊ और उनकी पत्नी उषाबेन भाऊ लहलुहान हालत में पड़े थे। पुलिस ने तुरंत एम्ब्युलेंस को बुलाया। हालांकि अस्पताल पहुंचने से पहले ही उषाबेन भाऊ की मौत हो चुकी थी। जबकि किरणभाई भाऊ को गंभीर हालत में एसजी हाईवे के एक प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस की प्राथमिक जांच में पता चला कि वृद्ध दंपति ने चाकू से अपना गला और हाथ काटकर आत्महत्या का प्रयास किया था। जिसमें पत्नी की मौत हो गई और पति गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना से पहले वृद्ध दंपति ने अपने भतीजे को मैसेज के जरिए आत्महत्या करने की जानकारी भी दी थी। हालांकि आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चला है। बताया जाता है कि वृद्ध दंपति पहले अमेरिका में रहता था और वहां से लौटने के बाद पहले अहमदाबाद के प्रहलादनगर में रहने लगा। पिछले चार महीने से ऑर्चर्ड एक्जोटिका में वृद्ध दंपति निवास कर रहा था। दंपति के परिवार में और कौन-कौन है इसकी फिलहाल कोई जानकारी नहीं है।

टी.एम. पटेल इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों को नाटक के माध्यम से सड़क सुरक्षा के प्रति किया जागरूक



सूरत भूमि, सूरत। टी.एम. पटेल इंटरनेशनल स्कूल (टीएमपीआईएस) ने 11 जनवरी से 17 जनवरी, 2023 तक सड़क सुरक्षा सप्ताह समारोह के तहत सड़क सुरक्षा उपायों पर एक नाटक का आयोजन किया। कक्षा 7 के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य माता-पिता और



छात्रों के बीच सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करना था। यह नाटक स्कूल के शिक्षाशास्त्र का हिस्सा है जिसका उद्देश्य मस्ती और नवाचार के माध्यम से छात्रों में सड़क सुरक्षा शिक्षा और उचित व्यवहार को विकसित करना है। नाटक के दौरान, छात्रों ने सीट बेल्ट

14 साल की नाबालिग लड़की से दो युवकों ने किया दुष्कर्म गर्भवती होने पर मामला आया सामने

सूरत। सचिन जोआईडीसी-कनसाड रोड क्षेत्र में 14 साल की नाबालिग लड़की के साथ दो युवकों अलग अलग समय पर दुष्कर्म किया। पीड़िता के गर्भवती होने पर पूरा मामला सामने आने पर परिवार ने आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करवा दी। पुलिस ने एक आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की है। जानकारी के मुताबिक सूरत के सचिन जोआईडीसी-कनसाड रोड क्षेत्र में उत्तर प्रदेश का मूल निवासी परिवार रहता है। परिवार की 14 वर्षीय किशोरी कक्षा 9 की छात्रा थी लेकिन पढ़ाई में मन नहीं लगने से उसने स्कूल छोड़ दी थी। चार दिन पहले किशोरी



के पेट में दर्ज होने और पेट बड़ा देख परिवार उसे तुरंत उपचार के लिए डॉक्टर के पास ले गए। जहां पता चला कि किशोरी चार महीने की गर्भवती है। डॉक्टर की बात सुनकर माता-पिता चाँक उठे और किशोरी इस बारे में पूछताछ की। किशोरी ने बताया कि अगस्त 2022 में घर के निकट रहनेवाले अमित सूर्यवंशी के साथ प्यार हुआ था और बाहर दोनों अक्सर मिला भी करते थे। उस दौरान अमित ने पेट में रहनेवाले विकास को महतो के माता-पिता जब गांव गए थे तब उसके घर में अमित ने उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए थे। उस दौरान किशोरी विकास के संपर्क में आई और

जी एच भक्त हाईस्कूल, महुवा में स्थित अटल टिंकरिंग लेब द्वारा तीन दिवसीय एडवांस्ड रोबोटिक्स वर्कशॉप का आयोजन किया गया



सूरत भूमि, सूरत। आज सूरत जिले के महुवा नगर में आई जी एच भक्त हाईस्कूल, महुवा की अटल टिंकरिंग

द्वारा स्वनिर्मित वाईफाई कार और ड्रोन का प्रोजेक्शन किया गया। इस प्रोजेक्शन की महुवा विभाग केलवनी मंडल ने बहुत ही सराहना की। यह कार्यक्रम 10 जनवरी 2023 के दिन शुरू हुआ था। लगातार 3 दिनों तक छात्रों ने टेक्निकल इंस्ट्रक्टर के अंडर में संपूर्ण मार्गदर्शन लेकर खुद वाईफाई कार और ड्रोन को असेंबल किया। स्कूल के सभी विज्ञान शिक्षकों ने अपना योगदान दिया। वर्कशॉप में कक्षा 8 से कक्षा 11 तक के बच्चों को टीम बनाकर वर्क दिया गया था। प्रेजेंटेशन के दिन महुवा विभाग केलवणी मंडल के प्रमुख श्री सुभाषभाई भक्ता ने पूरे कार्यक्रम में सहभागी होकर छात्रों को प्रोत्साहित किया। महुआ विभाग केलवणी मंडल के मानद मंत्री श्री जनकभाई देसाई ने अपने आशीर्चन दिए। महुवा विभाग केलवणी मंडल की ओर से सभी भाग लेने वाले बच्चों को प्रमोशनल गिफ्ट देने का वादा किया गया। मंडल के अन्य कर्मचारी श्री रजनीशभाई देसाई, श्री निखिलभाई व्यास ने भी हाजरी देकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। स्कूल परिसर के डायरेक्टर

बादाम खाने से मांसपेशियों के ठीक होने में मदद मिलती है और व्यायाम से थकान कम होती है

व्यायाम करने से स्वस्थ जीवनशैली बेहतर बनती है, लेकिन अगर इसे सही ढंग से नहीं किया जाए तो व्यायाम से थकान और मांसपेशियों को नुकसान हो सकता है। व्यायाम से लाभ प्राप्त करना जरूरी है क्योंकि इससे मांसपेशियाँ बनती हैं और समय के साथ तंदुरुस्ती बढ़ती है। कभी-कभी (प्रति सप्ताह तीन बार से कम) व्यायाम करने वाले लोगों पर हाल में एक शोध किया गया है। इस नए अध्ययन से पता चला है कि नष्ट के रूप में बादाम (आमंड) खाने से थकान और तनाव का अहसास कम होता है, स्वास्थ्यलाभ के दौरान पैर और पीठ के निचले हिस्से में ताकत बढ़ती है तथा स्वास्थ्यलाभ के पहले दिन के दौरान मांसपेशियों की क्षति कम होती है। अपलाचियन स्टेट यूनिवर्सिटी की ह्यूमन परफॉर्मेंस लैबोरेटरी के मुख्य अनुसंधानक तथा प्रोफेसर, डेविड



सो. नोमैन, डीआरपीएच, एफएसीएसएम ने आमंड बोर्ड ऑफ कैलिफोर्निया के आर्थिक सहयोग से इस नए अनुसंधान का नेतृत्व किया। डॉ. नोमैन की टीम यह देखना चाहती थी कि उच्च कार्बोहाइड्रेट युक्त अनाज के बार स्नेक की तुलना में बादाम के स्नेक 90 मिनट व्यायाम करने वाले व्यक्तियों में सूजन और स्वास्थ्यलाभ में सुधार करते हैं या नहीं। डॉ. नोमैन ने बताया कि, "हमने जो देखा उससे निश्चित तौर पर जानकारी मिलती है कि लोगों को व्यायाम से बेहतर स्वास्थ्यलाभ में मदद के लिए स्पॉर्ट्स यूटिलिटी स्ट्रेटिजी में बादाम को शामिल करना चाहिए। बादाम फिटनेस का फूड है। व्यायाम के लिए ऊर्जा के मामले में कार्बोहाइड्रेट्स पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जाता है, लेकिन बादाम एक न्यूट्रिशन पैकेज (सम्पूर्ण पोषण) है जिसमें गुणकारी असंतुष्ट फैट्स, ऐंटीऑक्सीडेंट, विटामिन ई, और प्रोएंथोसाइनाइड्स (पॉलीफेनॉल्स की श्रेणी, जो वनस्पतियों में रसात्मक यौगिक होते हैं) शामिल हैं, जिनसे हमारे अध्ययन के लाभकारी नतीजों को समझने में मदद मिलती है।" बादाम की एक खुरक (28 ग्राम) में 13 ग्राम असंतुष्ट फैट होता है जबकि संतुष्ट फैट केवल 1 ग्राम होता है।

टोयोटा किलोस्कर मोटर ने द आइकॉनिक हिलक्स की बुकिंग शुरू की



बैंगलोर। टोयोटा किलोस्कर मोटर (टीकेएम) ने अपनी आइकॉनिक लाइफस्टाइल यूटिलिटी व्हेकिल हिलक्स के लिए बुकिंग शुरू की। कहने की जरूरत नहीं है कि 2022 की शुरुआत में लॉन्च किए जाने के बाद से, हिलक्स को ग्राहकों ने खूब पसंद किया है और इसकी तारिफ इंडिया में इसकी शानदार स्टाइलिंग और ड्राइविंग आराम के लिए साहना की गई है। हिलक्स की उच्च मांग और आपूर्ति को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारणों के कारण प्रसिद्ध हिलक्स की बुकिंग अस्थायी रूप से रोक दी गई थी। हालांकि, आज की घोषणा के साथ, टोयोटा आउटलेट्स पर बहुप्रतीक्षित

की जरूरतें पूरी करनी हैं जो एक बेहतरीन लाइफस्टाइल यूटिलिटी व्हेकिल की तलाश में हैं, जो न केवल ड्रम इलाकों में ऑफ-रोडिंग एडवेंचर ड्राइव के लिए, बल्कि रोजमर्रा के शहर के उपयोग के लिए भी उपयुक्त है। इसके अलावा, यह बहुमुखी उपकरण, बहुउद्देश्यीय उपयोगों के लिए पूरी तरह से अनुकूल है जो नए उभरते व्यापार ग्राहकों को पूरा कर सकती हैं, चाहे वह कैब वैन, खेती, रक्षा, खनन, निर्माण, बचाव वैन आदि हो। इस घोषणा पर टिप्पणी करते हुए टोयोटा किलोस्कर मोटर के बिक्री और स्ट्रेटिजिक मार्केटिंग के वाइस प्रेसिडेंट श्री अतुल सूद ने कहा, चूंकि यह घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हमने पीढ़ियों से दुनिया भर में स्वीकार किए जाने वाले प्रतिष्ठित वाहन, हिलक्स के लिए बुकिंग शुरू कर दी है। हमारे इच्छा अपने ग्राहकों को अधिक गतिशीलता, विकल्प प्रदान करके उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए जीवन भर के अनुभवों के साथ उत्साहित करना है।

आर्सेनल फुटबॉल क्लब के सहयोग से अखिल भारतीय इंटर स्कूल एक्स्ट्रा मार्क्स यूथ फुटबॉल चैंपियनशिप आयोजित

सूरत । नए जमाने के डिजिटल लर्निंग सॉल्यूशंस का एक प्रमुख वैश्विक प्रदाता, एक्स्ट्रामार्क्स, आर्सेनल फुटबॉल क्लब के सहयोग से यूथ फुटबॉल चैंपियनशिप का रिवाउन्स एकेडमी सूरत पर आयोजन किया गया जो कि देश का पहला इंटरस्कूल फुटबॉल टूर्नामेंट है। सूरत की रिलायंस फाउंडेशन स्कूल, तासी वैली इंटरनेशनल स्कूल, एल.पी. सवानी अकादमी, एल.पी. सवानी विद्याभवन, एल.पी. सवानी पालनपुर, जी.डी. गोएन्का, एस्मार इंटरनेशनल स्कूल, उन्नति इंग्लिश एकेडमी, मेटास एडवेंचर्स, दीप दर्शन स्कूल, श्री श्री रविशंकर स्कूल और रेडिएंट इंग्लिश स्कूल जैसे 12 स्कूलों के 100



छात्रों को खेलने का मौका मिलेगा। इस प्रतियोगिता के माध्यम से देशभर के स्कूलों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को बड़े स्तर पर खेलने के लिये अवसर प्रदान किया गया। यह प्रतियोगिता अंडर-15 बालक और बालिका वर्ग के लिये है जिसमें 4 रोमांचक चरणों में 35 शहरों में मैच आयोजित होंगे। फाइनलिस्ट को लंदन के प्रतिष्ठित अमीरात स्टेडियम में फाइनल मैच खेलने का अवसर मिलेगा। एक्स्ट्रामार्क्स एजुकेशन वेस्ट इंडिया के बिजनेस हेड शैशव कायस्थ ने कहा कि, "एक्स्ट्रामार्क्स भारत में स्कूलों में छात्रों को न केवल शिक्षा में बल्कि खेल में भी समान अवसर देने के

लिए सबसे भरोसेमंद एवं श्रेष्ठ विषय सामग्री प्रदान करता है। एक्स्ट्रामार्क्स ने देश के सभी छात्रों को फुटबॉल में भाग लेने और एमेरिटस स्टेडियम लंदन में फाइनल खेलने का अवसर दिया है। एक्स्ट्रामार्क्स की डिजिटल माध्यम से अध्ययन कराया जाता है जिससे छात्र फुटबॉल चैंपियनशिप में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकते हैं। यूथ फुटबॉल चैंपियनशिप का लक्ष्य बच्चों के समग्र विकास में खेलों के महत्व को बढ़ावा देने के एक्स्ट्रामार्क्स के मिशन को आगे बढ़ाना है। यह अवसर रोमांचक खेल टूर्नामेंट

होने के अलावा, यूथ फुटबॉल चैंपियनशिप में सीखने की कार्यशालाएं और इंटरैक्टिव सत्र भी शामिल हुए। एक्स्ट्रामार्क्स और आर्सेनल एफसी 2022 की शुरुआत स्थानीय विकास कार्यक्रमों, फुटबॉल कार्यशालाओं, मोट एंड गेट्स और अन्य विशेष अनुभवों की प्रतियोगिताएं और गतिविधियों के साथ हुआ। इस साझेदारी के माध्यम से, एक्स्ट्रामार्क्स के पास सभी स्तरों पर सीखने के अवसरों को उपलब्ध कराने पारस्परिक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए, आर्सेनल की इमेजरी, क्लब-प्रमाणित कोच और प्रशिक्षण आधार सहित डिजिटल, सामाजिक और लॉजिस्टिक संसाधन उपलब्ध है।